॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

सितम्बर, 2015 वर्ष 18, अंक 9
विक्रमी सम्वत् 2072
एक प्रति का मूल्य 10/- रुपये

दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110
दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756

वार्षिक शुल्क 100 रुपये
ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com
कुल पृष्ठ 20

अपनी महिमा स्वयं बनो

❒ **महात्मा चैतन्यमुनि**

वेद एक ऐसा ग्रन्थ है जिसमें कहीं पर भी आपको किसी प्रकार का निराशाजनक चिन्तन नहीं मिलेगा बल्कि वेद में जीवन को जीने के ऐसे सूत्र दिए गए हैं जो हताश और निराश व्यक्ति को भी कर्मशीलता की ओर प्रेरित करते है। वैसे भी जीवन में व्यक्ति को कठिन से कठिन परिस्थिति में भी निराश नहीं होना चाहिए क्योंकि मनुष्य को परमात्मा की श्रेष्ठतम कृति बताया गया है। जीवन एक कर्मक्षेत्र है तथा कर्म के द्वारा हम बड़ी से बड़ी उपलब्धि को भी प्राप्त कर सकते हैं। वेद का एक सिद्धान्त है कि जीवात्मा कर्म करने में स्वतन्त्र मगर फल भोगने में परतन्त्र है। एक प्रकार से देखें तो परमात्मा ने कर्म की स्वतन्त्रता देकर सर्वाधिकार हमें ही प्रदान कर दिए है। अब इस स्वतन्त्रता का उपयोग हम जीवन के उत्थान के लिए करते हैं या पतन के लिए यह हमारे अपने ज्ञान, विवेक और प्रतिभा पर ही निर्भर करता है। जीवात्मा की कर्म-स्वतन्त्रता ही बता रही है कि हम अपने भाग्य के स्वयं ही निर्माता है अत: हमें अपने जीवन को सुकर्मो के साथ जोड़कर स्वयं अपने भाग्य का निर्माता बनना है। वेद में बहुत ही सुन्दर प्रेरणा देते हुए कहा गया है-

स्वयं वाजिँस्तन्वं कल्पयस्व स्वयं यजस्व स्वयं जुषस्व। महिमा तेऽन्येन न सन्नशे॥ (यजु. 23-15) मन्त्र में कहा गया है कि हे आत्मा! तू क्रियाशील व शक्तिशालीन है, तू अपने शरीर को शक्तिशाली बना और शक्तिशाली बनकर अपने जीवन को यज्ञमयी भावना से ओतप्रोत कर दे। बहुत ही समर्पण, प्रेम और श्रद्धा के साथ परमात्मा की उपासना कर। ऐसा करने से किसी दूसरे से तेरी महिमा नष्ट नहीं हो सकती अर्थात् तेरा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता है, तू स्वय की अपनी बन जाएगा।

वेद में बहुत सुन्दर एवं उत्कृष्ट प्रेरणा दी गई है। स्वयं को कभी भी दीन-हीन नहीं समझना चाहिए क्योंकि व्यक्ति का आत्मस्वरूप समस्त गुणों से परिपूर्ण है, बस उन गुणों को उद्‌बुध करने की आवश्यकता है। हमें सदा ही अपवित्रताओं को त्यागकर अपने स्वरूप में ही बने रहना चाहिए। आत्मा की श्रेष्ठता इसी बात में है कि वह सदा भद्रता के साथ ही जुड़ी रहे। यही नहीं बल्कि अपने स्वरूप में रहने का एक बहुत ही श्रेष्ठ एवं उत्कृष्ट भाव यह भी है कि हमें सदा ही आत्मा के स्तर पर जीना चाहिए। आत्मा का निज स्वरूप शुद्ध, बुद्ध और पवित्र है। फ्रायड ने एक स्थान पर बहुत ही सार्थक बात कही है कि 'वह व्यक्ति कभी भी सुखी नहीं हो सकता है जो यह नहीं जानता कि उसे क्या चाहिए। हमें क्या चाहिए यह हम तब तक नहीं जान सकते हैं जब तक यह न जानें कि हम है कौन? यदि हम शरीर मात्र हैं तब तो हम शरीर के स्तर पर ही जीएंगे। हमारी समस्त क्रियाएँ केवल शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति तक ही सीमित रहेंगी मगर जब हम इस स्तर पर जीएंगे कि मैं शरीर के अतिरिक्त शुद्ध, बुद्ध और पवित्र आत्मा हूँ तो हमारी समस्त क्रियाएँ केवल और केवल पवित्रता के साथ ही जुड़ जाएगी। हम सत्य और धर्म के साथ ही जुड़ जाएंगे आत्मा का निज स्वभाव वही है। हम ऐसे किसी भी कार्य से समझौता नहीं करेंगे जिससे हमारी आत्मा पर कुसंस्कार पड़ेंगे चाहे कितना ही बड़ा लाभ हो रहा हो मगर हम सदा ही सावधान रहेंगे।

आत्मा के इस स्वरूप में जीने में ही हमारी महिमा है और इस महिमा को बनाने के लिए ही इस वेद मन्त्र में कुछ महत्वपूर्ण बातें कही गई है। कहा है-(स्वयं वाजिन्) अर्थात् व्यक्ति को जीवन में सदा ही क्रियाशील बने रहना चाहिए और अपनी शक्तिशालीनता को भी निरन्तर ही बढ़ाते रहना चाहिए। उसे (तन्वम् कल्पयस्व) अपने शरीर को शक्तिशाली तो बनाना है मगर वह शक्ति किसी प्रकार के विध्वसं के लिए नहीं होनी चाहिए बल्कि सृजशीलता के लिए होनी चाहिए। इस प्रकार की मानवतावादी, त्याग, प्रेम, सौहार्द और समरसता की भावना तभी हो सकती है यदि व्यक्ति (स्वयं यजस्व) स्वयं को यज्ञमयी भावनाओं से परिपूर्ण करेगा। उसके भीतर सदा ही 'इदम् न मम्' की भावना से ओत-प्रोत होने की आवश्यकता है। इस प्रकार का जीवन और इस प्रकार की भावना प्रभु उपासना से स्वत: प्राप्त हो जाती है इसलिए आगे कहा गया (स्वयं जुषस्व) कि व्यक्ति को सदा ही प्रीतिपूर्वक परमात्मा की उपासना करनी चाहिए। उपासक व्यक्ति स्वाभाविक रूप से ही प्राणीमात्र के प्रति संवेदनशील बन जाता है। वह मनुष्य तो क्या किसी भी प्राणी को दु:खी नहीं देख सकता है। उपासक अत्यधिक संवेदनशील होता है। जब व्यक्ति उपरोक्त गुणों को अपने जीवन में आत्मसात् कर लेगा तो फिर (अन्येन ते महिमा न सन्नशे) किसी दूसरे से उसकी महिमा नष्ट नहीं हो सकती है अर्थात् उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता है। भला जो व्यक्ति अपने स्वरूप अर्थात् अपने आत्मस्तर को सुरक्षित रखने के लिए इस प्रकार के कार्य करेगा उसका पराभव कोई **(शेष पृष्ठ 18 पर)**

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

स्वामी सुमेधानन्द जी को एक आर्य पुत्र की श्रद्धांजलि

स्वामी जी ऋषि परम्परा के सन्यासी थे- पूनम सूरी

'श्रद्धेय स्वामी सुमेधानन्द जी नहीं रहे' समाचार सुनते ही मन अत्यंत दु:खित हुआ। उनके अन्तिम दर्शन का अवसर न मिल सका, इसका आजीवन खेद रहेगा। सोच रहा था कि 19-20 अगस्त को हमीरपुर में कार्यक्रम के बाद अपने साथियों को लेकर चम्बा पहुंचकर स्वामीजी के दर्शन से कृत्कृत्य हो जाऊँगा। ईश्वर की इस विशाल व्यवस्था में मेरी यह इच्छा पूर्ण न हो सकी, उसने मुझे भी अस्वस्थ कर दिया। वर्तमान विज्ञान ने इतना उपकार तो अवश्य किया कि टेलीफोन के जरिये स्वामीजी से सम्पर्क रहा।

स्वामी सुमेधानन्दजी को मैं ऋषि-परम्परा का संन्यासी मानता हूँ और उनका आज की परिस्थितियों में हमें छोड़ जाना एक ऐसी रिक्तता पैदा कर गया है जिसका भरा जाना यदि असंभव नहीं तो अत्यंत कठिन अवश्य है। सामान्यत: गृहस्थ और वानप्रस्थ होने के बाद 75 वर्ष की आयु में जिस संन्यास आश्रम को अंगीकार किया जाता है, स्वामी सुमेधानन्दजी ने 33 वर्ष की आयु में ही ऋषि (दयानन्द) निर्वाण उत्सव के दिन 1970 में स्वामी सर्वानन्दजी महाराज से उस संन्यास की दीक्षा ली। 6 वर्षो तक दयानन्द मठ, दीनानगर में उनके निवास काल में स्वामी सर्वानन्दजी महाराज उनके वैराग्य और योग्यता को पहचान गये थे। 'वा ब्रह्मचर्यादेव व्रजेत्' इस ब्राह्मण वचन का पालन हुआ। विद्वत्ता, जिन्तेन्द्रियता, विषय भोगों की कामना का अभाव और परोपकार करने की इच्छा भापकर स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने गोपाल नामक ब्रह्मचारी को स्वामी सुमेधानन्द नाम देकर संन्यास धर्म निभाने की आज्ञा दी। यह ऋषि परम्परा का निर्वाह था।

स्वामी सुमेधानन्दजी माँ गायत्री के समर्पित उपासक रहे। 45 वर्षो के सन्यास जीवन में स्वामी जी ने शिक्षा, स्वास्थ्य, दीन-दु:खियों की सेवा-सहायता के अतिरिक्त चम्बा जैसे दुर्गम स्थान पर मूर्ति-पूजा, अंध-विश्वासों तथा आडम्बरों के विरूद्ध निरन्तर लम्बी अवधि तक चलने वाले यज्ञों से इस घाटी में सच्ची आध्यात्मिकता, ईश्वर के सच्चे स्वरूप और सच्ची उपासना पद्धति को प्रचलित करने का प्रयत्न किया। संन्यास धर्म के इस महान उद्देश्य को प्राप्त करने के साथ-साथ स्वामीजी ने 'एकरात्रि वसेद ग्रामे' नारद परिव्राजकोपनिषद् के इस वचन के अनुसार चम्बा से निकल कर देश के विभिन्न राज्यों में ही नहीं विदेशों में भी वेद-ज्ञान और ऋषि-सन्देश का प्रचार किया।

डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति, इसकी 800 से ऊपर संस्थाओं, 20 लाख विद्यार्थियों और 60000 अध्यापक-अध्यापिकाओं तथा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा और इससे संबंधित आर्य समाजों पर स्वामीजी की विशेष कृपा रही। अभी एक वर्ष पहले ही शरीर की अस्वस्थता की परवाह किये बिना स्वामी जी (शेष पृष्ठ 19 पर)

दयानन्द का सच्चा सिपाई 'राज्यभवन' में

आचार्य देवव्रत हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल नियुक्त

संस्कृत में शपथ लेकर रचा इतिहास

10 अगस्त, 2015 को जारी आदेश के अनुसार आचार्य देवव्रत, प्राचार्य, गुरुकुल कुरुक्षेत्र, को हिमाचल प्रदेश का राज्यपाल नियुक्त कर दिया गया। इस समाचार के आते ही आर्य-समाज परिवेश में हार्दिक प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। आचार्यजी की यह उपलब्धि उनकी सतत साधना, तपस्या, संस्कार और गौ-सेवा के प्रति प्रतिबद्धता का परिणाम माना जा रहा है।

12 अगस्त, 2015 को हिमाचल प्रदेश के राजभवन में एक सादे-समारोह में प्रवेश के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति मंसूर अहमद मीर ने आचार्य देवव्रत को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। इससे पूर्व हिमाचल प्रदेश के मुख्य सचिव (शेष पृष्ठ 19 पर)

(विद्यार्थीयों के लिए विशेष)

परीक्षा के लिए समय प्रबन्धन

प्यास लगने के बाद यदि कुँआ खोदा जाता है, तो ऐसे व्यक्ति की नियति होनी ही है कि वह प्यासा रहेगा। ठीक यही बात परीक्षा के लिए समय के प्रबन्धन के बारे में भी है। परीक्षा आने पर समय का प्रबन्ध न करना ठीक वैसा ही है, जैसे कि घर में आग लगने के बाद पानी की तलाश में भटकना। यदि परीक्षा के समय की व्यवस्था करनी है, तो वह उसके शुरु होने से काफी पहले ही की जानी चाहिए।

समय-प्रबंधन के बारे में एक बात हमारे दिमाग में बिल्कुल साफ होनी चाहिए कि यह एक प्रकार का अनुशासन होता है और बिना अनुशासन के कोई भी उपलब्धि प्राप्त नहीं होती। ध्वनि को अनुशासित करने से वह राग बन जाता है। यदि शब्दों को अनुशासित कर दिया जाए, तो वही कविता बन जाती है। ठीक इसी तरह जब हम कोई एक लक्ष्य निर्धारित करके उसे समय की सीमा में अनुशासित कर देते हैं, तभी वह हमारी सफलता का कारण बनता है।

जब आप अपनी परीक्षा के लिए समय के बारे में सोचेंगे और उसे कार्यरूप देंगे, तब आपके दिमाग में हल्का-सा तनाव उभरेगा, क्योंकि जीवशास्त्री इस बात को स्वीकार करते हैं कि जीवन के लिए थोड़ा तनाव होना आवश्यक हैं हमें इस तनाव को खुले मन से आमंत्रित करना चाहिए।

यहाँ मैं परीक्षा के दो माह पूर्व के समय-प्रबंधन की चर्चा करने जा रहा हूँ। जैसे-जैसे आपकी परीक्षा के दिन नजदीक आते जाएँगे, वैसे-वैसे आपके दिनों की कीमत बढ़ती चली जाएगी। इसलिए अपने समय का प्रबन्धन करते समय ध्यान रखें कि आपकी समय-सारणी पिरामिड की तरह हो। कहने का अर्थ यह है कि आपको यदि अन्य कुछ काम निपटाने हैं, तो अभी शुरुआत में ही निपटा लें। जैसे-जैसे आप परीक्षा के नजदीक पहुँचते जाएँगे, वैसे-वैसे आपके उद्देश्य को पिरामिड की तरह नुकीला होते चले जाना है। यानी कि आपको स्वयं को क्रमशः अध्ययन की ओर केन्द्रित करते जाना है। इसलिए परीक्षा के लिए समय-प्रबन्धन का पहला सूत्र यही होगा कि यदि कुछ आवश्यक कार्य हैं, तो उन्हें जल्दी से जल्दी निपटाकर उनसे मुक्त हो जाएँ।

अब मैं आता हूँ-समय प्रबन्धन के कुछ व्यावहारिक पहलुओं पर। एक अच्छे विद्यार्थी के लिए जरूरी है कि वह अपने सारे पाठ्यक्रम को परीक्षा के कम से कम पन्द्रह दिन पहले तो पूरा कर ही ले। इसके बाद उनको दोहराने में लग जाए। वस्तुत: आपको यह नहीं भूलना चाहिए कि पढ़ाई की क्रिया एक प्रकार से कमरे में झाड़ू लगाने जैसी होती है। कमरे में थोड़ी-थोड़ी देर बाद झाड़ू लगाइए, कुछ-न-कुछ कचरा निकल ही आएगा। ठीक इसी तरह आप अपने पढ़े हुए और यहाँ तक कि याद किये हुए विषय को जितनी बार दुहराएँगे, आपके दिमाग से उसके बारे में उतनी ही गलतफहमियाँ दूर होती जाएंगी और उस विषय के बारे में आपका मस्तिष्क उतना ही अधिक स्पष्ट होता चला जाएगा। किसी विषय की जानकारी के बारे में यही वह आदर्शतम् स्थिति होती है, जब आप अधिक से अधिक अंक प्राप्त कर सकते हैं।

इस प्रकार यदि आप कम से कम परीक्षा से पन्द्रह दिन पहले के समय को दोहराने के लिए छोड़ दें, तो आपके पास पढ़ने के लिए डेढ़ महीने का समय बचता है। इस सम्बन्ध में मैं कुछ महत्वपूर्ण सुझाव है।

सबसे पहले उन विषयों या विषय के उन टॉपिक्स के लिए समय निश्चित करें, जिन्हें अभी भी आपने पढ़ा ही नहीं है। इसके लिए दिन निर्धारित कर लें और उस समय-सीमा में किसी भी हालत में इन टॉपिक्स को तैयार करें। ❑ समय के अधिकतम उपयोग के लिए यह अच्छा होगा कि आप एक दिन में एक ही विषय की तैयारी करें। ❑ आपके पास अभी 45 दिन हैं। आप देखिए कि किस विषय को कितने दिन और एक दिन में कितने घण्टे दिये जाने पर परीक्षा से पन्द्रह दिन पहले आप अपना पाठ्यक्रम पूरा कर लेंगे। उसी तरह से समय का विभाजन करें। ❑ यदि आपकी आदत नोट्स बनाने की है, तो अब समय नहीं रह गया है। बेहतर यही होगा कि सीधे पुस्तक से ही पढ़े। ❑ हर एक दिन की समय-सारणी कुछ इस तरह बनायें कि बीच में मन बहलाने का थोड़ा-सा अवसर रहे। आखिर हमारा दिमाग भी हमारे हाथ पैर की तरह ही हमारे शरीर का एक अंग है। उसकी भी अपनी क्षमता है जिस तरह सोने से शरीर ताजा होता है, उसी तरह मन बहलाने से मस्तिष्क ताजा होता है, लेकिन ध्यान रहे कि एक सीमा के अन्दर ही यह मनोरंजन होना चाहिए। ❑ हर काम के अच्छी तरह से होने का एक अनुकूल समय होता है, पढ़ने का आदर्शतम् समय भोर का होता है। आप यदि सुबह चार बजे से सात बजे तक या पाँच बजे से आठ बजे तक पढ़ते हैं, तो सही अर्थो में इन तीन घण्टों में आप इतनी पढ़ाई कर लेंगे, जितनी आप दिन में या रात में पाँच घण्टे में कर पाएँगे। इस प्रकार आप प्रतिदिन केवल यह तरीका अपनाकर बड़े आराम से दो घण्टे बचा सकते हैं। ❑ यदि आपकी आदत सुबह घूमने जाने की है, तो आप घूमने के दौरान पिछले दिन या भोर में पढ़े हुए टॉपिक्स को मन ही मन दोहराकर अपने उस समय का उपयोग कर सकते हैं। ठीक यही बस-ट्रेन में सफर करते हुए भी किया जा सकता है।

अब हम आते हैं-परीक्षा में पंद्रह दिन पहले के समय का प्रबन्धक करने के बारे में:- जो प्रश्न-पत्र पहले शुरु होने हैं, उन्हें पहले दोहराना शुरु करें और उसी क्रम में दोहराते चले जाएँ। ❑ परीक्षा के निकट आने पर अब आप पूरे विषय को न दोहराएँ, बल्कि उसके केवल महत्त्वपूर्ण टॉपिक्स को ही दोहराएँ। सामान्य टॉपिक्स पर केवल सरसरी निगाह डालें। ❑ यदि किसी प्रश्न-पत्र में काफी दिनों का गैप मिल रहा हो, तो अभी उस पर अधिक जोर न दें। उसकी तैयारी के लिए अन्तराल के उन दिनों का पूरा उपयोग करें। ❑ मन को शान्त रखने की कोशिश करें, क्योंकि शान्त और प्रसन्न मन ही गतिमान रहता है और गतिशील मन ही पढ़े हुए को ग्रहण करता है। यदि कोशिश करने के बाद भी कुछ टॉपिक्स शेष रह जा रहे हों, तो विचलित न हों। हमारी परीक्षा की पद्धति ऐसी है कि वहाँ कुछ को छोड़ा जा सकता है। ❑ परीक्षा के जैसे-जैसे करीब पहुँचें, वैसे-वैसे आपका अध्ययन 'सिलेक्टिव' होते चले जाना चाहिए। अनावश्यक टॉपिक्स को पढ़कर आत्मसन्तोष प्राप्त करने के मोह से बचें।

मैं समझता हूँ कि इस पद्धति को अपनाकर आप अपने समय का सर्वोत्तम उपयोग करते हुए निश्चित रूप से अपने प्राप्तांको में काफी वृद्धि कर सकते हैं।

समय का प्रबन्ध करते समय इस बात का ध्यान रखे कि कुछ समय सन्ध्या+हवन आदि के लिए भी रखे प्रभु से निकटता अनुभव करने से आत्म विश्वास में वृद्धि होती हो जो परीक्षा के निकट के दिनों में आवश्यक है। आर्य समाज से जुड़े आप को धोखा नहीं होगा।

अजय टंकारावाला

शान्ति पाने की अद्भुत शक्तियाँ

वेद में कहा है ''मनुर्भव'' अर्थात् हे मनुष्य तूने श्रेष्ठ योनि प्राप्त की है वह भी कितने जन्मों के पश्चात्, आत्मा को शुद्ध करके सुधार लाकर। अब वर्तमान का सुधार करते जायें, आत्मा के भीतर के पट खोलकर ज्ञान चक्षुओं से झांकते जायें तब तू प्राण त्याग तू हंसते-हंसते अंत करे। अगर अपनी सारी शक्तियों को कमजोर समझेगा, तेरा जीवन के हर क्षेत्र में फिसलना स्वाभाविक होगा। उसकी रक्षा कर।

अथर्ववेद कहता है-**''उद्यानं ते पुरुषः नावयानम्''**। तुझे ऊपर उठना है, नीचे गिरना नहीं, इसलिए पुरुषार्थ कर। फिर कहता है। **''कृतं में दक्षिणे हस्ते जयोमे सव्य, आहिता''** तेरे दाहिने हाथ में पुरुषार्थ है। तो बायें में निश्चय विजय होगी। क्योंकि दिव्य दैविक शक्तियाँ उसकी सहायता करती हैं। जो पहले परिश्रम करके थक जाता है।

स्वर्गीय टैगोर की बात पर ध्यान दें, मनुष्य बनकर जो शांति किसान का परिश्रम करके जो पसीना निकलता है उससे मिलती है। उस तरह अपने वर्तमान जीवन को ढालकर उस मजदूर की तरह बन, जो स्पात की मशीन पर मेहनत करके मानव आदि के लिए लोहा पैदा करके, पसीना बहाकर मकान बनाकर निवास करने का साधन देता है और वर्षा और हवा के झोंको से बचाकर सुख की नींद देता है।

पर तू अभी भी अंधकार में बैठा है, अज्ञानी बना बैठा, शरीर को हिलाना नहीं चाहता, आलसी, निकम्मा बना पड़ा रहता है, साहस खो बैठा है। फिर तुम्हें सुख कौन देगा।

ऋग्वेद कहता है। **''न व्रते श्रान्तस्य सव्यारू देवः''** क्योंकि तू यदि आलसी बनेगा, जो मनुष्य की श्रेष्ठ योनि का लक्ष्य भूल जायेगा। उस कटे पेड़ की तरह पड़ा रहेगा तो हिल नहीं सकता और ईश्वर भी नहीं सुनेगा तू अपनी शांति खो बैठेगा। इसलिए अपनी छिपी हुई शक्तियों का विकास कर जो तुझे सुख और आनन्द देने वाली है, वह है अच्छी धारणा से विचार उठेंगे, विचारों से ज्ञान आयेगा। शंकराचार्य ने ठीक कहा ज्ञान, दान सबसे बड़ा शांति और मोक्ष का मार्ग है ज्ञान विचारों को ऊपर उठाता है। अच्छे या बुरे कर्म की परख बताता है। ठीक प्रगति और सुख की दिशा देता है। सदा मानसिक शक्तियों को इकट्ठा करके मन को पाप कर्म की ओर झुकने नहीं देता। ज्ञान कर्म प्रणाली और कर्म और कर्म व्यवस्था में पवित्रता पैदा करके जीवन को हर्ष उल्लास देकर शान्ति के जीवन की कला सिखाता है। आत्म विश्वास सफलता की कुंजी है।

सफलता प्राप्त करने से सदा प्रसन्नता मन और देह दोनों को प्राप्त होती है। आत्म विश्वास बार-बार अभ्यास और मनन करने से मिलता है। यदि सच्ची शांति प्राप्त करना चाहता है तो भौतिक युग जो वस्तुएँ पदार्थो का इकट्ठा,करना, मनोरंजन करना, स्वार्थी वस्त्र पहनना सजाना, वासनाओं का शिकार बनाता है उन सबकी मर्यादा जान और जीवन को धर्मयुक्त, शुद्ध पवित्र बनाकर वैराग्य ला जो तुझे तेरी आध्यात्मिक शक्तियों को बल देकर प्रभु भक्ति की ओर ले जायेगा, तब तू सच्ची शान्ति पा सकेगा।

सच्ची शांति असत्य को त्यागने से मिलती है कपट, पक्षपात, अत्याचार, चोरी, जीभ के स्वाद और वासनाओं से नहीं मिलती, क्योंकि यह तो दुःख, कष्ट मृत्यु की ओर ले जाते है। वेद मन्त्र ठीक कहते हैं **ओ३म असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्मा अमृतगमय।** शान्ति पाना है तो सत का मार्ग अपना, अंधकार से दूर हो, प्रकाश की ओर जा, अमृत पा, मृत्यु से बच। अपनी बौद्धिक शक्तियों का विकास कर बुद्धि को नाश की ओर मत ले जाओ क्योंकि इसके नाश होने से आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक शक्तियों का नाश हो जाता है फिर अपनी बुद्धि संतुलन रख।

अतः सच्ची शांति की माया तो शारीरिक, मानसिक शक्तियों और आध्यात्मिक शक्तियों को अनुशासन, योगाभ्यास समाधि से मिल सकता है जो प्रभु के समीप भक्ति का मार्ग है।

अतः उपासना तो वैराग्य और योग, ध्यान, एकाग्रता से ही सफल होती है। पाठकों, अतएव सांसारिक बंधनों और इच्छाओं की मर्यादा में रहना सार्थक जीवन ही शांति पाने का असली मार्ग है, पर प्रभु भक्ति मत भूलो, ओ३म् शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः।

टंकारा ट्रस्ट इंटरनेट पर

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

www.tankara.com पर उपलब्ध है

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर **7000/-**रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

शान्तिदूत श्रीकृष्ण

प्राय: कहा जाता है कि यदि श्रीकृष्ण चाहते तो महाभारत के युद्ध को होने से रोक सकते थें इसका कुछ संकेत युद्ध की समाप्ति पर श्रीकृष्ण और महारानी गांधीरी के बीच हुए वार्तालाप में उपलब्ध है, जो इस प्रकार है-

युद्ध की समाप्ति पर अन्याय वीरों को मरा हुआ देख शोकातुर होकर महारानी गांधारी ने श्रीकृष्ण से कहा-

''हे मधुसूदन! तुम शक्तिशाली थे, तुम महाबली थे, तुममें दोनों पक्षों से अपनी बात मनवाने का सामर्थ्य था। तुमने वेद, शास्त्रों और महात्माओं की बातें जानी और समझी थी। तुमने कौरव वंश की उपेक्षा की और जानबूझकर वंश का विनाश होते देखा। यह तुम्हारा महान दोष है, अत: अब तुम इस पाप का फल भोगोगे। मैंने अपने पति की सेवा से जो भी पुण्य प्राप्त किया है, उस दुर्लभ तपोबल से मैं तुम्हें श्राप देती हूँ कि आज से 26वां वर्ष उपस्थित होने पर तुम्हारे कुटुम्बी, मन्त्री और पुत्र सभी आपस में लड़-लड़कर मर जाएँगे और भरतवंश की इन स्त्रियों के समान तुम्हारे कुल ही स्त्रियाँ भी अपने पुत्रों और सम्बन्धियों के मरने पर इसी प्रकार उनकी लाशों पर गिर-गिरकर रोएंगी। और एक दिन तुम भी अपरिचितों के समान वनों में विचरोगे और किसी दिन किसी निन्दित उपाय से मारे जाओगे।'' इस पर श्रीकृष्ण ने इतना ही कहा-''ऐसा ही होगा।'' (महा. स्त्रीपर्व, अध्याय 25)

परन्तु महाभारत का आद्योपान्त अध्ययन करने पर महारानी गांधारी द्वारा श्रीकृष्ण पर लगाया गया यह आरोप निर्मूल सिद्ध होता है। वस्तुत: श्रीकृष्ण ने युद्ध को रोकने का पूरा प्रयत्न किया था। यह और बात है कि वे अपने प्रयास में सफल न हो सके। युद्ध की समाप्ति के कुछ दिन बाद गांधारी का कहा सामने आ गया।

श्रीकृष्ण को अपनी सन्निकट मृत्यु का आभास हो गया तो उन्होंने अर्जुन को द्वारिका बुला भेजा। श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा कि मेरे यहाँ जो स्त्रियां है उन्हें तुम सुरक्षित हस्तिनापुर पहुँचा देना। यथासमय अर्जुन उन स्त्रियों को साथ लेकर चले तो मार्ग में पांचाल देश में आभीरों ने आक्रमण कर दिया। कुछ स्त्रियों का उन्होंने बलपूर्वक अपहरण कर लिया। कुछ मारपीट से बचने के लिए उनके साथ स्वेच्छापूर्वक चली गई। शेष को साथ लेकर अर्जुन ने उन्हें कुरूक्षेत्र के आसपास पहुँचा दिया। तत्पश्चात अर्जुन रोता हुआ महर्षि व्यास के आश्रम में पहुँचा। उसकी दुर्दशा देखकर व्यासजी ने उसका कारण पूछा तो अर्जुन ने बताया कि मैं श्रीकृष्ण के आदेशानुसार अपने साथ आई स्त्रियों को सुरक्षित हस्तिनापुर नहीं पहुँचा सका। व्यासजी ने पूछा कि गाण्डीव के होते हुए यह दुर्घटना कैसे हुई। तब अर्जुन बोला-''पता नहीं यह कैसे हुआ? उस समय मुझसे गांडीव पहले तो उठा नहीं, उठा तो ठीक दिशा में बाणों को नहीं फेंक सका।'' व्यासजी बोले-''अर्जुन! तुम्हें तो स्वचालित अस्त्रों का वरदान मिला हुआ था जो तुम्हारे पुकारते ही तुम्हारे अभीष्ट की सिद्धि में प्रवृत्त हो जाते।'' इसपर अर्जुन बोला-''मैं उन्हें कैसे पुकारता जबकि मैं उनके नाम भूल गया। बिना पुकारे वे आते कैसे? मैं यही जानना चाहता हूँ कि मेरी यह दशा कैसे हो गई?'' बिना पुकारे वे आते कैसे? मैं यही जानना चाहता हूँ कि मेरी यह दशा कैसे हो गई?'' व्यासजी ने समाधान करते हुए कहा-''कालमूलमिदं सर्वम्। काल पर किसी का वश नहीं चलता। इसी कारण श्रीकृष्ण पर दोषारोपण करना सर्वथा असंगत है।''

कौन कह सकता है कि श्रीकृष्ण ने अपने कुल के लोगों को सन्मार्ग में लाने का प्रयास नहीं किया होगा? किन्तु ''धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे'' का उद्घोष करनेवाले श्रीकृष्ण अपनी रक्षा कर सके और न ही अपने कल की। महाभारत के युद्ध को रोकने की उन्होंने भरसक चेष्टा की, परन्तु वे सफल न हो सके। वृष्णिकुल का नाश अवश्यम्भावी था तो इसमें श्रीकृष्ण की बुद्धिमत्ता और प्रयास क्या करते? जो होना था सो होकर रहा।

<u>क्या कृष्ण परमेश्वर के अवतार थे? क्या परमेश्वर मनुष्य-शरीर धारण करता है?</u> परमेश्वर को मानने वाले सब आस्तिक लोग उसको सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, अजन्मा, अमर, अनादि, अनन्त आदि गुणों से सम्बोधित करते हैं। स्वामीजी ने सत्यार्थ प्रकाश में ऐसे ही अनेक गुणों को रेखांकित किया है विस्तार से। पुन: यह बात किस तरह ठीक हो सकती है कि उस सर्वशक्तिमान् परमेश्वर को अपने सेवकों के रक्षण हेतु नर-देह धारण करने की आवश्यकता पड़े? मनुष्य-देह में आने से तो वह स्वयं बंधन में पड़ जाएगा और तब वह सर्वव्यापी नहीं रह सकता।

क्या ईश्वर का अवतार मानने वाले हमको यह बतला सकते हैं कि जिस समय श्रीकृष्ण महाराज के शरीर में परमात्मा ने अवतार लिया था उस समय सारे संसार का शासन कौन करता था? जब श्रीकृष्ण कौरवों से लड़ते थे, शिशुपाल से झगड़ते थे, जरासंध के भय से भागते फिरते थे उस समय संसार का प्रबंध किसके हाथ में था और किस तरह चल रहा था? तात्पर्य यह है कि बुद्धि इस बात को कदापि स्वीकार नहीं कर सकती कि इस सृष्टि का स्वामी और बनाने वाला परमात्मा कभी नर-देह में आता है। उसका तो यही गुण है कि वह संसार के सारे प्रपंचों से परे है। यह शरीर तो उसके बनाये हुए हैं। मनुष्य जिसके कार्य-कौशल को स्वयं नहीं समझ सकता, उसके विषय में कह देता है कि वह परमेश्वर ही इस बलहीन और बंधन-युक्त मनुष्य-देह में आता है। ताकि वह हमें अपने उदाहरणों से बतला सके कि किस प्रकार से जीवन व्यतीत करना चाहिए। उस परमात्मा के विषय में ऐसा सोचना वास्तव में उसके ईश्वरत्व को अस्वीकार करना है। मनुष्य को ईश्वर का पद देना या ईश्वर को गिराकर मनुष्य के पद पर पहुँचा देना बड़ा भारी अपराध है। हमें खेद है कि हमारी जाति के लोग इस बुनियाद पर इतना भरोसा रखते हैं और अवतारों को माने बिना धर्म-शिक्षा का होना भी विचार में नहीं ला सकते। यद्यपि यह विषय बहुत आवश्यक और मनोरंजक भी है, इस पर वादानुवाद करने को भी जी चाहता है, परन्तु लेख के बढ़ जाने का विचार हमें रोकता है। अस्तु, केवल इतना कहकर हम संतोष करते हैं कि वेदों और उपनिषदों में परमात्मा को अज (अजन्मा), अमर, अविनाशी और अकाय इत्यादि कहा है। यदि हम यह मान लें कि परमात्मा स्वयं भी देह धारण करता है तो उपर्युक्त सभी गुण व्यर्थ हो जाते हैं।

<u>अवतारों का अभिप्राय महापुरुषों से है:-</u> नि:संदेह अवतारों से अभिप्राय यदि ऐसे महापुरुषों से है जिनकी शिक्षा-दीक्षा से, जिनकी जीवन-प्रणाली से दूसरे मनुष्य अपने जीवन को उत्तम बना सकते हैं और इस संसार-रूपी समुद्र से तैरकर पार हो जाते हैं, तो कोई हानि नहीं। इस बात से कौन इन्कार कर सकता है कि संसार में समय-समय पर ऐसे

लोगों की अत्यन्त आवश्यकता पड़ती है और ऐसे लोग समय-समय पर जन्म भी लेते हैं जिनकी शिक्षा-दीक्षा, आदेश और उपदेशों से तथा जिनके जीवन की पवित्रता से दूसरे लोग लाभ उठाते हैं। जीवन के इस तूफान-भरे समुद्र में भूलों-भटकों और भँवर में पड़ी हुई नावों के लिए वे मल्लाह का काम करते हैं तथा अत्यन्त निराश, हतोत्साही अशान्त और व्याकुल आत्माओं को शान्ति देते हैं। ऐसे लोग संसार की प्रत्येक जाति में उत्पन्न होते हैं और वे उन मुक्त आत्माओं की श्रेणी में से आते हैं जिनको अपनी उच्च आत्मिक शक्ति के कारण दूसरे मनुष्यों की अपेक्षा परमात्मा की निकटता प्राप्त होती है। यह ईश्वरीय शक्ति कितनी ही अधिक क्यों न हो फिर भी ईश्वर-ईश्वर ही है और मनुष्य-मनुष्य ही है। मनुष्य कभी ईश्वर नहीं हो सकता और न आत्मा परमात्मा के पद को प्राप्त हो सकती है।

हमारा विश्वास है कि यह सब पूर्णपुरुष ईश्वर के उस नियम को फैलाने, समझाने और प्रचार करने के लिए जन्म लेते हैं जो ईश्वर ने सृष्टि के आदि में अपने जनों के कल्याण के लिए निज ज्ञान दिया था और जिसे संस्कृत भाषा में वेद कहते हैं।

क्या कृष्ण ने स्वयं कभी परमेश्वर के अवतार होने का दावा किया? :- कृष्ण ने स्वयं कभी अवतार होने का दावा नहीं किया। भगवद्‌गीता के अतिरिक्त महाभारत के और किसी हिस्से में ऐसे दावे का प्रमाण भी नहीं मिलता। भगवद्‌गीता श्रीकृष्ण की बनाई हुई नहीं है इसलिए भगवद्‌गीता का प्रमाण इस विषय को पूर्ण रूप से पुष्ट भी नहीं कर सकता। परन्तु यदि आप प्रश्न करें कि भगवद्‌गीता के बनाने वाले ने क्यों ऐसी युक्ति दी जिससे यह परिणाम निकलता कि कृष्ण महाराज अपने आपको अवतार समझते थे? इसका उत्तर यह है कि अपने कथन को विशेष माननीय और प्रामाणिक बनाने के लिए उन्होंने ऐसा किया। भगवद्‌गीता का वह भाग जिसमें कृष्ण अपने को परमात्मा या परमात्मा का अवतार मानकर उपदेश करते हैं, यह प्रकट करता है कि गीता एक प्राचीन पुस्तक नहीं हैं, क्योंकि वैदिक साहित्य में जिसमें ब्राह्मण, उपनिषद् और सूत्रादि भी शामिल हैं, उसमें इस प्रकार के बहुत कम प्रमाण हैं जिनमें उपदेश करने वाले को ऐसा (अवतार का) पद दिया गया हो। जहाँ तक हमने छानबीन करके मालूम किया है उपनिषदों में केवल एक ऋषि के वचनों में इस तरह का वर्णन पाया जाता है और वह भी इतना स्पष्ट और बहुतायत से नहीं जैसा भगवद्‌गीता में। भगवद्‌गीता का क्रम प्रकट करता है कि भिन्न-भिन्न समय के पंडितों की रचना से यह पुस्तक भरी है। अतः यह निश्चित है कि गीता कृष्ण की बनाई हुई नहीं है। गीता के प्रमाण से कोई यह नहीं कह सकता कि कृष्ण स्वयं अवतार होने का दावा करते हैं।

– साभार योगीराज श्री कृष्णः लाला लाजपतराय कृत

अपील

सभी आर्य बहनों से नम्र निवेदन कर रही हूं कि वह ऋषि भूमि टंकारा से अवश्य ही जुड़े, वहां पर होने वाले कार्यो को ध्यान से देखें। बड़े ही अच्छे अच्छे कार्य हो रहे हैं। उन कार्यो में अपना सहयोग देकर ऋषि ऋण उतारने की कोशिश करें और यह हम आर्य बहनों का कर्त्तव्य भी है। टंकारा हमारा तीर्थ स्थल है, वहां कार्यो की बहती गंगा है-गुरुकुल में बच्चों को पढ़ा सकते हैं, छोटे बच्चों को बहुत कुछ सिखा सकते हैं-विशेषकर महिला सिलाई केन्द्र में सहयोग देकर बड़ा ही भला काम कर सकते हैं। यह आवश्यक नहीं है कि वहां लगातार रहना होगा। वर्ष में दो तीन बार जाकर सेवा कर सकते हैं। जो बहन वहां जाने की इच्छा रखती हो, वह कृपया मेरे से सम्पर्क करें, तो मैं विस्तृत रूप से बताकर पूरा सहयोग दूंगी।

- राज लूथरा, जी आई 976, सरोजनी नगर,
नई दिल्ली-110023, मो. 9971206548

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं अथवा गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 12,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

-: निवेदक :-

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

"माँ की आखिरी चिट्ठी"

❒ टंकारा श्री अरूणा सतीजा

तुम्हारी आखिरी चिट्ठी के आखिरी शब्द जो तूने लिखे हैं वह मुझे काले नाग की तरह डस रहे हैं। तूने लिखा है कि माँ तुम बेटे को धीरे-धीरे भुलाने की आदत बना लो लेकिन ऐसा सोचना मात्र ही एक माँ-बाप के लिए कितना पीड़ादायक तथा असम्भव है जिसका दर्द तुम अभी अनुभव नहीं कर सकते।

तू गांव में पला बड़ा और यहीं पढ़ लिख कर आज के मुकाम पर पहुंचा। गांव की संस्कृति में बड़ा हुआ और आज एक काबिल अफसर बना। आज उस गांव की संस्कृति में ऐसी कौन सी विकृति आ गयी। जो तेरे यहां आने और कुछ दिन यहां रहने से तेरी शहरी पढ़ी लिखी पत्नी व बच्चों पर गलत व बुरा प्रभाव पड़ता। यदि शहरी बहू एक पल भी यहां नहीं रह सकती तो उसने एक गांव के लड़के से कैसे व क्यों शादी कर ली?

हम तो तुम्हें, बहू व दोनों पोतो को याद करके इतना रोते हैं कि आंखो से आंसू नहीं सूखते। हम तो तुम्हें बुढ़ापे में सहारा और घर का उजियारा देखते थे, पर आज इस घर में अन्धेरा है। दु:ख है तथा दरिद्रता है। हमें अफसोस है और पश्चात्ताप भी कि हम ने कड़ी मेहनत कर गरीबी की हालत में तेरे जैसे बेटे को उच्च शिक्षा दिला कर इस मुकाम तक पहुंचाया।

बेटे लाल अब इस आखिरी चिठ्ठी के लिए अन्तिम शब्द बोलूंगी। यदि तुमने हमारे साथ ऐसा किया तो इन भोले-भाले गांव वाले जो तुम पर गर्व करते हैं उनका पढ़ाई पर से विश्वास उठ जाएगा और एक आदर्श मिसाल की जगह तू एक बुरा उदाहरण बन जाएगा। इस पाती ने मेरे मन को हिला दिया, मस्तिष्क में विचारों की जंग होने लगी। यह मात्र एक कहानी नहीं है। आज की हकीकत है, पारिवारिक जीवन की झांकी है। आज ऐसी विरह और असहायता की पीड़ा को लाखों मां बाप झेल रहे हैं। वृद्ध-आश्रम क्या हैं। इसी बेबसी का प्रतीक ही तो है। कभी वृद्ध आश्रमों में जाकर तो देखों बजुर्ग कितनी आतुरता तथा व्याकुलता से अपनों का इंतजार करते हैं विशेषकर विशेष अवसरों पर।

मेरे देश व समाज के नौजवानों बुजुर्ग कोई रद्दी कागज का टुकड़ा नहीं है कि बुढ़ापा और आर्थिक तंगी आयी और उन्हें कहीं दूर घर के कोने में खाट डाल दी।

आपके सामने एक सत्य, आंखों देखी घटना का वृत्तान्त बता रहीं हूँ। एक बुजुर्ग महिला का इकलौता बेटा था, बाप बहुत ही अमीर था। शानदार कोठी तथा करोड़ों का धन्धा था। अचानक पिता की मत्यु हो गई। एक दिन मुझे उनके घर जाना पड़ा व एक दिन के लिए रूकना भी पड़ा। जब मैंने कहा अम्मा जी से तो मिलवाओं। बड़ी शान से उनकी बहू मुझे दूर घर के कोने में बनी एक कोठरी में ले गई जहां बुजुर्ग महिला अकेली दीन-हीन दुदर्शा की हालत में ऊँची-ऊँची सांसे ले रही थी। पास में एक थाली एक कटोरी व गिलास और लोहे की एक पुरानी परात भी मल-मूत्र के लिए रखी थी।

मत भूलों बुजुर्गो के पास तो अनुभवों का अनमोल खजाना है। उनमें परिवार निर्माण की अद्‌भुत शक्ति होती है। हमारे बुजुर्ग हमारे व्यक्तित्व रूपी वृक्ष के बीज है। मां-बाप ही तो सच्चे तीर्थ है जिनमें जीवित देवताओं के दर्शन होते हैं। जिन्दगी में दो व्यक्तियों का सदा ध्यान रखों। एक वह जिसने तुम्हारी जीत के लिए सब कुछ हारा हो-पिता। दूसरी वह जिसको तुमने हर दु:ख में पुकारा हों-मां।

अपनी संवेदनाओं को जागृत करों और रिश्ते की गरिमा को सागर की गहराइयों तक ले जाओं तभी जीवन में सुख के मोती मिलेगें। दूसरा विचार जो मस्तिष्क में हलचल मचाता है वह है शिक्षा। क्या वर्तमान शिक्षा का उद्‌देश्य मात्र- Eat Drink and be marry है या प्यासे हिरण की तरह धन की तलाश में भागते रहना और फिर मर जाना या फिर अपने सभी प्रकार के नैतिक कर्त्तव्यों से मुंह तोड़ लेना अर्थात् नहीं। यह सब तो पाश्विक प्रवृत्तियां है जो मनुष्य को मानव से दानव बनाती है। शिक्षा तो ज्ञानदीप है जो मानव को मानवता की ओर ले जाता है। शिक्षा का उद्‌देश्य मानव में ज्ञान की ज्योति जलाकर उसे देवत्व तक पहुंचाना है।

"हे! मानव तू महान है सर्वगुणों की खान है परन्तु क्यों तू आज बना शैतान है।" जब कोई परिवार या समाज न्यायपूर्वक नहीं चलता तो उसमें बिखराव आ जाता है। यही बिखराव वर्तमान सामाजिक जीवन को पीड़ा देने वाली परिस्थितियों का मूल कारण है। पहला- अपनी भारतीय महान संस्कृति की विस्मृति। दूसरा मुख्य कारण है पाश्चात्य संस्कृति का अति अन्धानुकरण। पाश्चात्य संस्कृति अति खुलेपन की संस्कृति है जो विकृति है। अति भौतिकता का द्वार विनाश की ओर खुलता है। यही कारण है कि आज प्रत्येक भारतीय नागरिक दु:ख पीड़ा अवसाद, एकाकीपन तथा विभिन्न प्रकार की व्याधियों से पीड़ित हैं। इस अति भौतिकवादी जीवन शैली में भावी पीढ़ी को बचाना राष्ट्र समाज व परिवार का नैतिक कर्त्तव्य है।

आज आवश्यकता है भारतीय संस्कृति को पुन: धारण करने की। वैदिक संस्कृति को पुन: लौटाने की। यह संस्कृति है उच्च सात्विक सिद्धान्तों की। जिससे मानव जीवन का निर्माण होता है। इसमें परस्पर प्रेम सेवा त्याग, क्षमाशीलता जैसे नैतिक गुणों का सुन्दर समावेश है। नैतिक गुणों का उद्‌गम स्थान है परिवार। मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त परिवार में रहता है। परिवार में ही शिशु-मानव का निर्माण होता है। परिवारों के विघटन को रोकना अनिवार्य है। संयुक्त परिवार प्रणाली का नवीनीकरण कर इस परम्परा को पुन: जीवित करना चाहिए। वर्तमान परिपेक्ष में संयुक्त परिवारों की महती आवश्यता है। अति भौतिकवादी जीवन शैली के कारण नारी का कारोबारी होना एक आवश्यकता है। जब माता-पिता नौकरी पर चले जाते है तो मासूम फूल से बच्चों को क्रचों में रखा जाता है जहां उन्हें मां सी ममता नहीं मिल पाती और बड़े बच्चे घर में एकाकीपन के कारण दिशाहीन होते जा रहे है क्योंकि उन्हें घर में संस्कारों से सुसज्जित करने वाला कोई नहीं होता। इसी बाल्यकाल और किशोरअवस्था में ही तो संस्कारों की नींव खड़ी होती है और इसी आधार शिला पर शेष जीवन का भव्य व सुन्दर जीवन का निर्माण होता है। मां व दादी की लोरियों में इतनी शक्ति होती है कि वह बच्चे को जो बनाना चाहे बना सकती हैं। सुसंस्कारित बच्चे जीवन में अधिक सफल होते हैं।

अपने घरों के धार्मिक बनाओं। यज्ञ प्रणाली को अपनाओं थोड़े-थोड़े अन्तरालों में पारम्परिक उत्सव बड़े उत्साह से मनाओं। परस्पर प्रेम बड़ेगा। प्रेम एक ऐसी कुंजी है (चाबी) है जिससे जीवन का हर ताला

खुलता है। मृत पितरों के श्राद्ध मत करों उनके जीवनकाल में ही उनकों इतना तृप्त करों कि उनका रोम रोम आपको सुखी जीवन का आशीर्वाद दे। दवाओं से ज्यादा दुआओं में महान् शक्ति है। कर्त्तव्य पालन में ही सच्ची भक्ति है न कि धार्मिक आडम्बरों में। ईश्वर को भी कर्मशीलता प्रिय है।

दादी लाओं की प्रथा को पुनः स्थापित करो ताकि प्रत्येक बुजुर्ग अपने घर में अपने पोते-पोतियों के साथ आनन्दमय जीवन व्यतीत कर सकें। आज लोगों में तमों गुण हावी होते जा रहे हैं जो केवल विध्वंसक वृत्तियों को बढ़ाते है। आज समाज में सब यही तो हो रहा है। अत्याचार करने वालों से बढ़कर कोई अभागा व्यक्ति नहीं होता।

महान् पुरुषों की जीवनियों को पढ़ने की आदत बनायें जीवन में सुधार आयेगा वरना!

एक पुत्र अपने पिता को वृद्ध आश्रम में छोड़ने गया जब पिता कार से उतर कर वृद्ध-आश्रम की तरफ बढ़ा तो भावुक हो गया परन्तु उसी क्षण उसे ख्याल आया कि कुछ वर्ष पूर्व मैं भी तो अपने पिता को इसी आश्रम में छोड़ने आया था।

- फ्लैट न. 101 बी-9, ध्रुव मार्ग, तिलक नगर, जयपुर।, दूरभाष न.-9460183872

सैकेण्ड ओपिनयन

❒ ओमप्रकाश बजाज

साधारणतया हर परिवार का एक डाक्टर होता है। आवश्यकता होने पर उसे ही कंसल्ट करते हैं और इलाज कराते हैं। उसी की सलाह से स्पेशलिस्ट को भी दिखाते हैं तथा जरूरी टैस्ट भी करवाते हैं, उस पर पूरा भरोसा होता है। होना भी ऐसा ही चाहिए। उस डाक्टर को परिवार के हर छोटे बड़े सदस्य की हिस्ट्री भी ज्ञात होती है तथा वह तदनुसार इलाज भी करता है। डाक्टर भी होता तो एक इन्सान ही है। उसकी भी अपनी पारिवारिक समस्याएं होती है। इतने सारे मरीजों की भान्ति-भान्ति की शिकायतों का प्रेशर भी उस पर होता है। कभी कभार ही सही उससे भी चूक हो सकती है। अंदाजे की गलती भी हो जाती है। ऐसे में रोगी को हानि न भी हो स्वस्थ होने में देरी तो हो ही सकती है। हमारी बेटी के बुखार का इलाज चल रहा था। चिकित्सक शहर के माने हुए बड़े डाक्टर थे। बुखार उतरने का नाम ही नहीं ले रहा था। हम ही नही डाक्टर भी परेशान थे। अचानक एक मित्र ने बातों बातों में कहा कि कभी कभी इन्फैक्शन के कारण भी बुखार होता है और जब तक उस का इलाज न हो बुखार नहीं उतरता, संकोच के बावजूद मेरी पत्नी ने उसी शाम डाक्टर साहिब से चलते-चलते कह डाला। डाक्टर बोले कि हां ऐसा हो तो सकता है। यूरिन का कल्चर करा लेते हैं, कहना न होगा कि चंद दिन में हमारी बेटी स्वस्थ हो गई। कई बार डाक्टर का माइण्ड एक ही ट्रेक पर भी चलता रहता है।

कुछ दिन पहले की बात है आंखों के डाक्टर ने चैक-अप के बाद मेरी दोनों आंखों में गुलूकोमा (काला मोतिया) शुरु होने की बात कही, इसी सिलसिले में टैस्ट भी लिख दिये। गुलूकोमा के नाम से ही दिल बैठ गया। क्योंकि बताते हैं कि उसका कोई इलाज नहीं, दवाइयों से केवल उसका बढ़ना धीमा भर हो जाता है। परिवार में निश्चय हुआ कि सेकिण्ड ओपिनियन ले लेना उचित होगा। शहर के सबसे सीनियर आई स्पेशलिस्ट को दिखाया जब सारे चेक-अप आदि के बाद उन्होंने कहा कि आंखें उम्र के हिसाब से बहुत अच्छी है। गुलूकोमा का कहीं जरा भर भी अंदेशा नहीं है। आप अंदाजा लगा सकते हैं कि कितना इतमीनान हुआ! यह किसी चिकित्सक पर कोई आक्षेप नहीं है, बस इतना भर कहना है कि किसी गंभीर स्थिति में आवश्यकतानुसार सेकिण्ड ओपिनयन ले जाने में कोई हर्ज नहीं। इससे कभी कभी लाभ भी हो सकता है।

- 166-कालिन्दी कुंज, पिपलिहाना, रिंग रोड, इंदौर-4452018, म.प्र., फोन-0731-2593443

गौ-दान : महा-दान

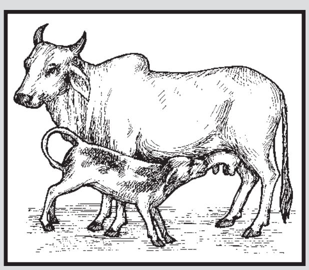

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से **20,000/-** रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

देवदयानन्द के दीवाने
ठाकुर विक्रम सिंह जी

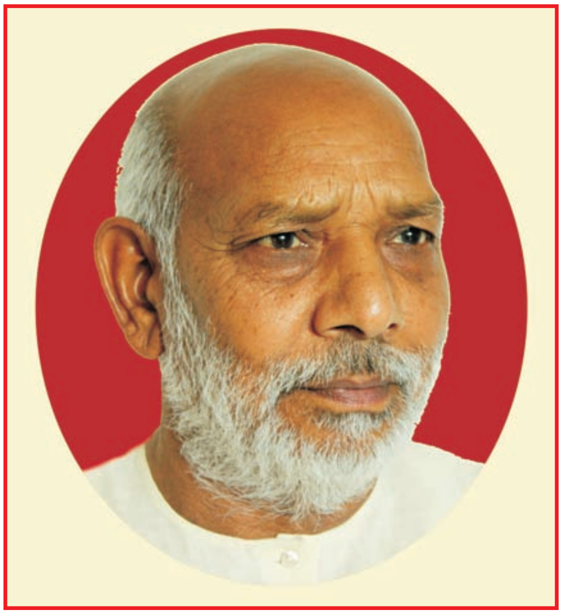

आप का जन्म स्वतन्त्रता से 4 वर्ष पूर्व 19 सितम्बर को ग्रा. खेड़ी राजपूतान पो. खतौली, मुजफ्फर नगर (उत्तर प्रदेश) में एक उच्च जमीन्दार राजपूत परिवार में हुआ। माता का नाम शर्बती देवी, पिता का नाम ठाकुर रणवीर सिंह था। परिवार कट्टर आर्य समाजी था। स्वामी दयानन्द जी के समय से ही, इसलिए राजपूत होते हुए मांसाहार, शराब आदि दुर्गुणों से बचे रहे और समाज के निम्न वर्ग को साथ मिलाने ऊँचा उठाने के लिए बड़ा कार्य किया। आज भी वही भावना मौजूद है। बीस वर्ष की आयु तक गांव में रहे। आपके पूज्य दादा ठाकुर लटूर सिंह जी ने स्वामी दयानन्द जी महाराज के दर्शन सूरजकुंड मेरठ में किये, महाराज का व्याख्यान यज्ञ पर चल रहा था। दादा जी ने महाराज के पैर छुए और उनका आशीर्वाद पाया। अपनी बैठक बनवाई तो उसमें बड़ा हवनकुंड बनवाया। जिसमें यज्ञ आदि होते रहे। आपके बाबा ठा. अमर सिंह जी कट्टर आर्य थे। आस-पास के सभी गांवों में अनेको आर्य समाजो की स्थापना की। आपके ताऊ ठाकुर बलवीर सिंह बात के धनी मरोड के ठाकुर थे। साथ ही पिता ठाकुर रणवीर सिंह पहलवान क्रान्तिकारी थे। पूज्य स्वामी भीष्म जी महाराज, जिन्हें राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह भी अपना गुरु मानते थे। अतः आप जन्म से पूर्व और स्वामी दयानन्द जी के समय से ही आर्य समाजी है। अतः आपको सत्य बात कहने में न डर लगता है और न किसी से दबना सीखा। आप स्वामी दयानन्द के जीवन से प्रभावित है और जैसे दयानन्द जी किसी से डरे नहीं, झुके नहीं उसी प्रकार ठाकुर विक्रम जी किसी असत्य से समझौता नहीं किया आपका यही मानना है दयानन्द के ये शब्द अन्यायकारी चक्रवर्ती सम्राट से भी ना डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे।

राष्ट्र की स्वतन्त्रता के मुख्य सूत्रधार, आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द थे और 1857 की क्रान्ति का सूत्रपात भी मेरठ से उन्हीं ने किया। रानी झांसी, तात्या टोपे, कुवंरसिंह, नाना साहब आदि उनके शिष्य थे राष्ट्र ने आज उन्हें भुला दिया। इसलिए राष्ट्र-जनता दुखी है।

प्रथम 2 वर्ष तक गांव में खेती की और किसान रहे फिर शहर में आ गये। 20 वर्ष से 40 वर्ष तक की आयु आर्य समाज के द्वारा समाज सेवा की। इसी बीच अपनी शिक्षा पूरी करते हुए मेरठ यूनिवर्सिटी से एम.ए. हिन्दी से किया। अंग्रेजी और संस्कृत का विशेष अध्ययन किया। आर्य समाज के प्रसिद्ध शास्त्रार्थ महाराथी अमर स्वामी एवं रामचन्द्र देहलवी के चरणों में बैठकर अध्ययन किया, इसलिए आपको किसी धर्म और राजनीति का आदमी चुनौती नहीं दे सकता। आज भी खुली चुनौती है, शास्त्रार्थ करने की भारत के प्रधानमन्त्री चौधरी चरण सिंह जी एवं राजा विश्वनाथ प्रताप सिंह और श्री चन्द्रशेखर जी से आपके निकट सम्बन्ध रहे। आज आप इस निर्णय पर पहुंचे कि अच्छे लोगों को राजनीति में रहना चाहिए और भारत को सर्वश्रेष्ठ बनाना चाहिए। आपके दो मुख्य लक्ष्य है अहिंसा परमधर्म है एक भी निरपराध प्राणी गाय व भैंस वंश, बकरी, भेड़, ऊंट सबकी रक्षा होनी चाहिए। जो यहां दूध की नदियां बहनी चाहिए, खून की नहीं। आरक्षण हटाओं, धर्म, जाति, भाषा प्रान्त की दीवारे तोड़ो और योग्यता के आधार से सब आगे बढ़े। आप पत्थर की तरह से कठोर भी है और फूल की तरह से कोमल भी आपके कुल में सदा ही धीर-धीर गम्भीर, न्यायप्रिय, परोपकारी, दयालु, दानवीर, कलाप्रेमी एवं समाज सुधारक उत्पन्न होते रहें है।

स्वामी दयानन्द जी के समय से ही आपने सब अछुतों को गले लगाया और अपने कुएं पर उन्हें पानी भरवाना शुरु किया साथ ही उनके हाथ से पानी पीना, भोजन करना, घर के सब काम करवाना प्रारम्भ किया तथा अनेकों दलित परिवार के बेटे-बेटियों की शिक्षा नौकरी में पूर्ण सहयोग दिया।

40 वर्ष की आयु में परिवार का बोझ बढ़ गया। आर्य समाज की सेवा करने हेतु चालीस वर्ष में अपना व्यापार शुरु किया। वैसे तो अपने पचास वर्ष होते ही वैदिक परम्परानुसार वानप्रस्थ ले लिया था। फिर भी परिवार की जिम्मेदारी से मुक्त होने में समय लग गया और 60 वर्ष की आयु में बच्चों ने आपको कार्य मुक्त कर दिया। फिर आप समाज सेवा में जुट गये। समाज सेवा करते-करते अनुभव हुआ कि स्वतन्त्रता के बाद देश का माहौल बदल गया है। हजारों समाजसेवी वह कार्य नहीं कर सकते हैं जो एक मन्त्री, मुख्यमन्त्री, प्रधानमन्त्री कर सकता है।

अतः अच्छे लोग सत्ता मे रहे तो जनता आनन्द ही आनन्द में रहेगी। अतः राष्ट्र निर्माण पार्टी का गठन किया और यू.पी. से चुनाव लड़ा और लड़ाया। उत्तर प्रदेश में आप बीजेपी के सर्मथन से चुनाव लड़ने जा रहे है। आप अमेरिका, रूस, हॉलैंड, इंग्लैंड, रोम, फ्रांस, स्विटजरलैंड, मौरिशस, सिंगापुर, मलेशिया, दुबई आदि कम से कम 20 देशों का भ्रमण किया। आपने अनेक ग्रन्थों का सम्पादन व लेखन किया।

आपने 2009 में 'मनु संस्कृति संस्थान' की स्थापना की और उससे अनेक ग्रन्थ छपाकर सारे देश में वितरण किये। (1) पूज्य अमृतस्वामी जी महाराज का अभिनन्दन ग्रन्थ का सम्पादन किया। (2) कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर स्मृति ग्रन्थ का सम्पादन किया। (3) पं. चन्द्रभानु अभिनन्दन ग्रन्थ का सम्पादन किया। (4) सोम सोपान पुस्तक लिखी। (5) मनुस्मृति के स्वर्णाक्षर पुस्तक का प्रकाशन कर मनु के विरोधियों को शास्त्रार्थ की चुनौती दी।

(6) पाखण्डी गुरु पुस्तक छपाकर पाखण्डी गुरुओं की पोल खोली। (7) करवाचौथ का व्रत पुस्तक छपाकर महिलाओं का सम्मान किया। (8) भारत संविधान जनता विरोधी पुस्तक छपाकर सरकार को झझकोरा। (9) महात्मा लटूर सिंह भजनावली का प्रकाशन किया। (10) प. शोभाराम प्रेमी का अभिनन्दन ग्रन्थ गीत का प्रकाशन किया। (11) आज का भारत पतन ही पतन को पुस्तक छपाकर सब पार्टी और नेताओं को दिये। (12) कुरान के बारे में ऐतिहासिक फैसला छपाकर मुल्लों पर आक्रमण किया। (13) स्वामी भीष्म जी ने क्रान्ति गीत पुस्तक का प्रकाशन किया।

(1) विशाल हिन्दू सम्मेलन का आयोजन 'देवबन्द' में किया। मुस्लिम समर्थक मुलायम सिंह की सरकार ने प्रतिबन्ध लगा दिया। बड़ा संघर्ष हुआ। (2) विशाल हिन्दू सम्मेलन अभी अप्रैल 2015 में हरिद्वार में आयोजित किया। जिससे देश में बड़े-बड़े सन्त महात्माओं ने भाग लिया। डा. सुब्रह्मण्यम स्वामी का विशेष भाषण कराया। (3) पश्चिमी उत्तर प्रदेश के 10 जिलो में सैकड़ो आर्य समाजो का पुर्नउत्थान किया। गांव-गांव आर्य समाज के उत्सव कराये। गांव-गांव योग कक्षायें लगवाई। आर्यवीर दल के कैम्प लगाये। (4) सभी गुरुकुल, गौशाला, यज्ञशाला, उपदेशक, भजनोपदेश सभी को आर्थिक सहयोग करते हैं। वर्ष में करोड़ो रूपया सहयोग करते है। काश दयानन्द और आर्य समाज दिगविजयी हो। (5) मेरठ में क्रान्ति सम्मेलन किया। दिन रात समाज सेवा के लिए समर्पित, किसी सभा, आर्य समाज संस्था, क्षत्रिय सभा सेवा बताये। कोई पद स्वीकार नहीं करूंगा। परिवार में 4 टेकु. प्राज्ञ आर्य, राहुल आर्य, इन्द्रवीर, डॉ. वरूणवीर, बेटी साधना आर्य सब विवाहित हैं, संयुक्त परिवार है। सभी आनन्द में है। इनका जीवन केवल परोपकार के लिए है। तन-मन-धन अर्पित है।

आर्यन अभिनन्दन समारोह

सभी आर्य सन्यासी, विद्वान, महोपदेश, उपदेशक, भजनोपदेशक, ढोलक वादक जिनकी आयु 60 वर्ष या उससे अधिक है, हम उन सबका अभिनन्दन करेंगे। योग्य पात्र सादर आमंत्रित हैं। कृपया अपना परिचय निम्न पते पर भेजें। **नोटः** केवल वे ही सज्जन लिखें जिन्होंने सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज के लिए लगाया है। कहीं अध्यापक या अन्य कोई नौकरी या कार्य नहीं किया हो। **समारोह का विवरणः** अध्यक्षता-स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, स्थान-गुरुकुल, गौतम नगर, नई दिल्ली, समयः प्रातः 9 बजे से 1 बजे तक, शनिवार दिनांकः 19 सितम्बर, 2015

ठाकुर विक्रम सिंह, ए-41, द्वितीय तल, लाजपत नगर पार्ट-2, निकट लाजपत नगर मेट्रो स्टेशन, नई दिल्ली-110024, फोन-011-45791152/011-29842527

टंकारा समाचार

पाठकों से विनम्र निवेदन

आपका प्रिय टंकारा समाचार निरन्तर 17 वर्षो से प्रति माह प्रकाशित हो रहा है। हमारा यह प्रयास रहा है कि वेद प्रचार, वैदिक मान्यताओं, महर्षि दयानन्द सरस्वती का दर्शन आप तक सरलतम भाषा में पहुँचे। आप द्वारा दिये गये सहयोग से इसकी ख्याति दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। आप इसके मान्य आजीवन सदस्य है।

आप सभी आजीवन सदस्यों से अनुरोध है कि 200/- रूपये की राशि टंकारा समाचार के नाम चैक द्वारा या टंकारा समाचार के **खाता नम्बर 0130010101110898**, **बैंक पी.एन.बी. मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली, IFSC Code-PUNB0466500** में सीधे जमा करके अथवा NEFT करवा कर टंकारा समाचार कार्यालय, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर सूचित करें अथवा मोबाइल नम्बर 09560688950 पर एस.एम.एस. या कॉल कर (अपना आजीवन सदस्यता नम्बर नाम पते सहित भेजें।) ताकि टंकारा समाचार आपको प्राप्त होता रहे। **(क्योंकि आजीवन सदस्य की राशि बढ़ा दी गई है।)** **-प्रबन्धक**

टंकारा ट्रस्ट के प्रधान महात्मा सत्यानन्द मुंजाल जी के छोटे भ्राता श्री ओम प्रकाश मुंजाल जी का देहावसान

आर्य जगत को यह बड़े दुःख से सूचित करते हुए कि श्री ओम प्रकाश जी मुंजाल जो कि महात्मा सत्यानन्द जी मुंजाल के छोटे भाई थे का देहान्त 13 अगस्त 2015 को लुधियाना में हुआ। पूर्ण वैदिक रीति से दिनांक 14 अगस्त 2015 को आपका अन्तिम संस्कार हुआ। आप एक विश्व ख्याति प्राप्त उद्योगपति थे। आपकी मृत्यु पर लुधियाना के सभी उद्योग एक दिन के लिए शोक में बंद रहे। आपकी ख्याति इसी बात से जानी जा सकती थी जब आपकी शव यात्रा लुधियाना की सड़को से होती हुई शमशान भूमि की ओर जा रही थी तो आपके साथ हजारों नहीं लाखों आपके चाहने वाले आपके साथ थे। लुधियाना में 16 अगस्त 2015 को श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया, जिसमें उद्योग जगत् के एवम् सामाजिक जगत् से प्रमुख लोग उपस्थित थे। जिन्होंने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इसी उपलक्ष्य में एक प्रार्थना सभा दिल्ली स्तर पर भी की गई जो कि दिनांक 23 अगस्त 2015 को ताज पैलेस होटल में आयोजित की गई।

टंकारा परिवार की ओर से शोकाकुल परिवार को हार्दिक संवेदनाएं।

વેદ અને શૂદ્ર

રમેશચન્દ્ર મહેતા (૯૪૨૭૦૦૧૧૧૯)

વેદના સિદ્ધાન્તોથી અનભિજ્ઞ સમાજ વિશેષ કરીને પૌરાણિક હિન્દૂ સમાજના કથિત વિદ્વાનો અને સમ્પ્રદાયવાદિઓ વેદના પુરુષ સૂકતને જાતિવાદની ઉત્પત્તિનું મૂળ માને છે. યજુર્વેદમાં પુરુષ સૂકત ૧૬ મંત્રોનો સમૂહ છે, જે બાકીના ત્રણ વેદમાં પણ સાધારણ તફાવત સાથે જોવા મળે છે.

પુરુષ સૂકત જાતિવાદના પોષક નહીં અપિતુ વર્ણ વ્યવસ્થાના આધારભૂત મંત્ર છે. જેમાં *(બ્રાહ્મણોસ્ય મુખમાસીત્)* ઋગ્વેદના ૧૦.૯૦ મંત્રમાં બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય, વૈશ્ય અને શૂદ્રને શરીરના મુખ, ભૂજા, મધ્યભાગ અને પગની ઉપમાં આપવામાં આવી છે. આ ઉપમાં પરથી સિદ્ધ થાય છે કે જેમ મુખ, ભૂજા, આદિ ચારે અંગ મળીને સમ્પૂર્ણ શરીર બને છે એવી જ રીતે બ્રાહ્મણ આદિ ચારે વર્ણ ભેગા થાય ત્યારે આદર્શ સમાજ બને છે.

જેવી રીતે શરીરના આ ચારે અંગ એક-બીજાના સુખ-દુઃખનો અનુભવ કરે છે, એવી જ રીતે સમાજના બ્રાહ્મણાદિ ચારે વર્ણના લોકાએ એક-બીજાના સુખ-દુઃખને પોતાના સુખ-દુઃખ સમજવા જોઈએ.

જો પગમાં કાંટો વાગે તો મ્હોંમાંથી ચીસકારો નીકળે છે અને હાથ મદદ માટે પહોંચી જાય છે, એવી જ રીતે સમાજમાં જ્યારે શૂદ્રને કોઈ મુશ્કેલી પડે ત્યારે બ્રાહ્મણ અને ક્ષત્રિયે પણ આગળ આવવું જોઈએ. ચારે વર્ણમાં પરસ્પર સહાનુભૂતિ, સહયોગ અને પ્રેમ-પ્રીતિનો વ્યવહાર હોવો જોઈએ. આ સૂકતમાં કયાંય શૂદ્રો માટે ભેદભાવની વાત નથી આવતી.

આ સૂકતનો બીજો એક અર્થ એવી રીતે કરવામાં આવે છે કે જ્યારે કોઈપણ વ્યક્તિ કોઈપણ જ્ઞાતિનો હોય પણ જો એ સમાજમાં ધર્મ-જ્ઞાનના સંદેશનો પ્રચાર-પ્રસાર કરવામાં યોગદાન આપતો હોય તો એ બ્રાહ્મણ અર્થાત્ સમાજનું શીશ છે. જો કોઈ વ્યક્તિ સમાજની રક્ષા અથવા નેતૃત્ત્વ કરતી હોય તો એ ક્ષત્રિય અર્થાત સમાજની ભૂજા છે. જો કોઈ વ્યક્તિ દેશને વ્યાપાર-ઉદ્યોગાદિથી સમૃદ્ધ કરતી હોય તો એ વૈશ્ય અર્થાત્ સમાજનો મધ્યભાગ છે અને જો કોઈ વ્યક્તિ ઉપરોકત ગુણોથી રહિત હોય તો એટલે કે ઉપરોક્ત ત્રણે પ્રકારના કાર્ય કરવામાં અસમર્થ હોય તો એણે ત્રણે વર્ણના લોકોની સેવા કરવાનું યોગદાન આપવું જોઈએ એટલે કે એ સમાજના પગ છે. આવી રીતે એક મજબૂત અને આદર્શ સમાજની રચના થાય છે.

દુર્ભાગ્યે વર્તમાનમાં પોત-પોતાના રાજનીતિક હિતોને સાધવા માટે જાતિવાદને સમાપ્ત કરવાને બદલે વિકસાવવાનું પ્રોત્સાહન અપાઈ રહ્યું છે. આપણા રાજનીતિજ્ઞોએ મોગલો અને અંગ્રેજો કરતા પણ વધારે ઝનૂનથી જાતિવાદનો ફેલાવો કરવાનું કામ કર્યું છે. આજની તારીખમાં શાળા-કૉલેજોમાં પ્રવેશ લેતી વખતે જાતિનો ઉલ્લેખ કરવો અનિવાર્ય થઈ પડ્યો છે. અને હવે તો ધીરે ધીરે જાતિઓમાં પણ ઉપ-જાતિ અને દલિતોમાં પણ ઉચ્ચ - પછાત શોધવામાં આવ્યા છે.

વેદના વિષયમાં ફેલાવવામાં આવેલી બીજી એક ભ્રાંતિ એ પણ છે કે વેદ બ્રાહ્મણવાદી ગ્રંથ છે અને શૂદ્રોને અછૂત માને છે. જાતિવાદનું મૂળ પણ વેદને કહેવામાં આવી રહ્યું છે. આવા ઝેરી પ્રચારને કારણે દેશમાં દલિતો અને પછાતો આંદોલન ચલાવી રહ્યા છે. જોવાનું છે કે આવા વિચારની ઉત્પત્તિ થઈ કયાંથી?

સહુ પહેલા બૌદ્ધકાળમાં વેદની વિરુદ્ધમાં આંદોલન થયું. તે સમયે સંપૂર્ણ ભારતમાં બૌદ્ધોનો પ્રભાવ છવાયેલો હતો. વૈદિક ગ્રન્થોના કેટલાયે મૂળપાઠોને વિકૃત કરીને સમાજમાં ભ્રમ ફેલાવીને હિન્દૂ સમાજને વિઘટિત કરી નાખવામાં આવ્યો હતો. સમાજના લોકોનું હજારો જ્ઞાતિ-પેટાજ્ઞાતિઓમાં વિભાજન કરી દેવામાં આવ્યું હતું. પછી મોગલો અને અંગ્રેજો આવ્યા. અંગ્રેજો માટે વૈદિક ગર્ન્થેમાં કરવામાં આવેલી વિકૃતિ વરદાન સાબિત થઈ. એમના માટે સમજમાં થયેલું વિભાજન પણ લાભકારી સિદ્ધ થયું.

અંગ્રેજી શાસનકાળમાં કથિત પાશ્ચાત્ય વિદ્વાનો જેવા કે મેકસમૂલર, ગ્રિફિથ, બ્લૂમફિલ્ડ આદિ લોકોએ વેદોનો અંગ્રેજીમાં અનુવાદ કરતી વખતે એ વાતનું વિશેષ ધ્યાન રાખ્યું હતું કે એવો અનુવાદ કરવો કે જેને કારણે ભારતીય સમાજની વેદો પરથી શ્રદ્ધા ડગમગી જાય અને વેદોના વિરોધી બની જાય. આને કારણે ઈસાઈ મતના પ્રચાર - પ્રસારમાં સરળતા રહે. બૌદ્ધ, મોગલ અને અંગ્રેજ આ ત્રણેને પોતાના આ કાર્યમાં ઘણી સફળતા મળી છે.

અંગ્રેજીકાળમાં વેદોને જાતિવાદના સંરક્ષક ગણાવ્યા હતા જેથી હિન્દૂ સમાજનું મુખ્ય અંગ કહેવાય એવો દલિત સમાજ ઈસાઈયત તરફ પ્રયાણ કરવા લાગ્યો. તમિલનાડુ, કેરળ અને પશ્ચિમ બંગાળમાં ગરીબ અને દલિત હિન્દૂઓના મનમાં વેદ અને બ્રાહ્મણો તરફ નફરતનું વાતાવરણ ઊભુ કરવામાં આવ્યું. તેઓને કહેવામાં આવ્યું કે તમારી વર્તમાન દુર્દશાનું મૂળ કારણ તમારો ધર્મ અને શાસન છે. આમ કહેનારાઓ ભૂલી ગયા કે એક સમયે બૌદ્ધોનું અને પછી મોગલોનું શાસન પણ દેશમાં રહ્યું છે. તો પછી સમાજની દુર્દશાનું કારણ કોણ હતું?

સવાલ એ ઊભો થાય છે કે શૂદ્ર કોણ? બ્રાહ્મણ કોણ? ક્ષત્રિય કોણ? અને વૈશ્ય કોણ? આજના સંદર્ભમાં શૂદ્રની પરિભાષા કરીએ તો મહાભારતના રચયિતા વેદ વ્યાસ શૂદ્ર હતા. રામાયણના રચયિતા વાલ્મીકિ પણ શૂદ્ર જ હતા. ભગવાન શ્રી કૃષ્ણ અહીર યાદવ સમાજના હતા તો એમને શું માનવા? વેદોના ઋષિઓ વિષે જાણવા જીએ તો આજની વ્યાખ્યા પ્રમાણે ઘણાને શૂદ્ર માનવા પડે.

મહર્ષિ સ્વામી દયાનન્દે વેદોનું અનુશીલન કરતી વેળાએ જોયું કે વેદ તો મનુષ્યમાત્રને જાતપાત કે લિંગના ભેદભાવ વિના વેદ ભણવાનો અધિકાર આપે છે. ઋષિ દયાનન્દના પ્રાદુર્ભાવ સમયે શૂદ્રો માટે વેદ ભણવાના અધિકારનો નિષેધ હતો, એનાથી વિપરીત સ્વામી દયાનન્દે સ્પષ્ટ જોયું કે શૂદ્રોને વેદ ભણવાનો અધિકાર તો સ્વયં વેદ જ આપે છે.

યજુર્વેદ ૨૬.૨ મુજબ હે મનુષ્યો! જેવી રીતે હું પરમાત્મા સહુનું કલ્યાણ કરવાવાળી ઋગ્વેદાદિ રૂપ વાણીનો સર્વજનહિતાય ઉપદેશ કરું છું, એવી રીતે હું આ વાણીનો બ્રાહ્મણ અને ક્ષત્રિયો માટે ઉપદેશ આપી રહ્યો છું, શૂદ્રો અને વૈશ્યો માટે જેમ આ વેદવાણી ઉપદેશી રહ્યો છું અને જેને તમે લોકો તમારા આત્મીય માનો છો, એ બધા માટે ઉપદેશ આપી રહ્યો છું, અને જેને 'અરણ' અર્થાત્ પરાયા માનો છો, એમના માટે પણ હું ઉપદેશી રહ્યો છું, તમે બધાં પણ એવી જ રીતે આ વાણીનો ઉપદેશ આગળ અને આગળ ફેલાવતા રહો – એનો પ્રચાર - પ્રસાર કરતા રહો.

વાસ્તવમાં શૂદ્ર કોઈ જાતિ વિશેષનું નામ નહોતું. બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય અને વૈશ્ય પણ કોઈ જાતિ વિશેષનું નામ નહોતું. આ

તો બૌદ્ધકાળ અને મધ્યકાળની વિકૃતિઓ છે, જે સમાજમાં પ્રચલિત થઈ ગઈ છે. વર્ણને જ્ઞાતિ સાથે જોડી દેવાયો છે.

અથર્વવેદ ૧૯.૬૨.૧ માં પ્રાર્થના છે કે હે પરમાત્મા! તમે મને બ્રાહ્મણોનો, ક્ષત્રિયોનો, શૂદ્રોનો અને વૈશ્યોનો પ્રિય બનાવી દો, જેના કારણે બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય અને વૈશ્ય આ બધા મને પ્રેમ કરે. અહીં જોવાની વાત એ છે કે આ મન્ત્રના કર્તા કોણ છે?

યજુર્વેદ ૧૮.૪૮માં પ્રાર્થના છે કે હે પરમાત્મા! તમે અમારી રુચિ બ્રાહ્મણો પ્રત્યે ઉત્પન્ન કરો, ક્ષત્રિયો પ્રતિ ઉત્પન્ન કરો, વૈશ્યો પ્રતિ ઉત્પન્ન કરો અને શૂદ્રો પ્રતિ પણ ઉત્પન્ન કરો.

મંત્રનો ભાવ એ છે કે હે પરમાત્મન્! તમારી કૃપાથી અમારા સ્વભાવ અને મન એવા બની જાય કે બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય, વૈશ્ય માટે અમારા મનમાં પ્રેમભાવ જાગે, સર્વ વર્ણના લોકો અમને સારા લાગે. ભદાં જ વર્ણના લોકો માટે અમારો વર્તાવ સદાય પ્રેમ અને પ્રીતિનો હોય.

પ્રાચીનકાળમાં ***જન્મના જાયતે શૂદ્રઃ*** અર્થાત્ જન્મથી પ્રત્યેક ગુણરહિત એટલે કે શૂદ્ર છે એવું માનવામાં આવતું હતું અને શિક્ષા પ્રાપ્ત કર્યા પછી ગુણ, કર્મ અને સ્વભાવના આધારે વર્ણનો નિર્ણય થતો હતો. આવી વ્યવસ્થા સમાજમાં પ્રત્યેક વ્યક્તિ પોત-પોતાની ક્ષમતા મુજબ સમાજના ઉત્થાનમાં પોતાનું યોગદાન આપી શકે એટલા માટે કરવામાં આવી હતી. દુર્ભાગ્યે મધ્યકાળમાં આ વ્યવસ્થા જ્ઞાતિ પ્રથામાં ફેરવાઇ ગઈ.

જો જ્ઞાતિના માપદંડથી જોઈએ તો એક બ્રાહ્મણનો પુત્ર દુરાચારી, કામી, વ્યસની, માંસાહારી અને અભણ હોવા છતાં પણ બ્રાહ્મણ કહેવાવા લાગ્યો જ્યારે કે શૂદ્રનો પુત્ર ચરિત્રવાન, શાકાહારી, ઉચ્ચ શિક્ષિત હોવા છતાં પણ શૂદ્ર જ કહેવાયો. હોવું જોઈતું હતું આનાથી ઊંધું.

આ જાતિવાદને કારણે દેશ અને સમાજમાં વિઘટન થયું છે. આજે સમાજમાં યોગ્યતાના આધારે પરોક્ષ રીતે વર્ણની સ્થાપના થવા લાગી છે. એક ચિકિત્સકનો પુત્ર ત્યારે જ ચિકિત્સક કહેવાય જ્યારે એણે પણ ચિકિત્સક બનવા યોગ્ય શિક્ષણ પ્રાપ્ત કર્યું હોય. એક એન્જીનિયરનો પુત્ર પણ એવી જ રીતે શિક્ષણ પ્રાપ્ત કર્યા પછી જ એન્જીનિયર બની શકે છે, તો બ્રાહ્મણનો પુત્ર પણ જો અભણ હોય, ગુણ-કર્મ-સ્વભાવ બ્રાહ્મણના ન હોય તો એને શૂદ્ર શ્રેણીનો જ માનવો પડે. આજ વેદોક્ત વર્ણવ્યવસ્થા છે.

વાસ્તવમાં વેદ અને પુરાણોના સંસ્કૃત શ્લોકોનો હિન્દી અને અંગ્રેજીમાં વિકૃત અનુવાદ જ કરવામામ નથી આવ્યો, સાથે સાથે એના વિકૃત અર્થ પણ કાઢવામાં આવ્યા છે. જે કામનો પ્રારમ્ભ પાશ્ચાત્ય વિદ્વાનોએ કર્યો હતો આજે એમના માનસ પુત્રો એ કામને આગળ વધારી રહ્યા છે.

વેદોના શત્રુ વેદના પુરુષ સૂક્તને જન્મના જાતિવાદનું સમર્થક માને છે. પૂરુષ સૂક્ત ૧૬ મંત્રોનું સમૂહ છે, જે થોડાગણા અંતર સાથે ચારે વેદમાં આવે છે.

પૂરુષ સૂક્તમાં જાતિવાદના નહીં અપિતુ વર્ણ વ્યવસ્થાના આધારભૂત મંત્રો છે, જેમાં *બ્રાહ્મણોસ્ય મુખમાસીત્* ઋગ્વેદ ૧૦.૯૦માં બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય, વૈશ્ય અને શૂદ્રને શરીરના મુખ, ભુજા, મધ્ય ભાગ અને પગની ઉપમાં આપવામાં આવી છે. આ ઉપમા પરથી એ સિદ્ધ થાય છે કે જેવી રીતે શરીરના આ ચારે અંગ ભેગા થઈને સંપૂર્ણ શરીર બને છે, એવી જ રીતે બ્રાહ્મણ આદિ ચારે વર્ણ ભેગા થાય ત્યારે આદર્શ સમાજ બને છે.

જેવી રીતે શરીરના આ ચારે અંગ એક-બીજાના સુખ-દુઃખને પોતાના સુખ-દુઃખનો અનુભવ કરે છે, એવી જ રીતે ચારે વર્ણના લોકોએ એકબીજાના સુખ-દુઃખને પોતાના સુખ-દુઃખ માનવા જોઈએ.

જો પગમાં કાંટો વાગે મ્હોંમાંથી સીસકારો નીકળી જાય છે અને હાથ મદદ માટે પહોંચી જાય છે, એવી જ રીતે સમાજમાં જો શૂદ્રને તકલીફ પડે તો બ્રાહ્મણ અને ક્ષત્રિયે પણ એની સહાયતાર્થે પહોંચી જવું જોઈએ. બધા વર્ણોમાં પરસ્પર સહાનુભૂતિ, સહયોગ અને પ્રેમ-પ્રીતિનો વ્યવહાર હોવો જોઈએ. આ સૂક્તમાં કયાંય શૂદ્રો સાથે કોઈપણ પ્રકારના ભેદભાવની વાત નથી કરી.

આ સૂક્તનો એક બીજો અર્થ આવી રીતે થઈ શકે છે કે જ્યારે કોઈપણ વ્યક્તિ કોઈપણ જ્ઞાતિનો હોય, જો એ સમાજમાં ધર્મજ્ઞાનનો સંદેશ પ્રચાર-પ્રસાર કરવામાં યોગદાન આપતી હોય તો એ બ્રાહ્મણ અર્થાત્ સમાજનું શીશ છે. જો કોઈ વ્યક્તિ સમાજની રક્ષા અથવા નેતૃત્ત્વ કરી રહી હોય તો એ ક્ષત્રિય અર્થાત્ સમાજની ભૂજા છે. જો કોઈ વ્યક્તિ દેશને વ્યાપાર, ઉદ્યોગ આદીથી સમૃદ્ધ બનાવી રહી હોય તોએ વૈશ્ય અર્થાત્ સમાજનું પેટ છે અને જો કોઈ વ્યક્તિ ઉપરોક્ત ત્રણે ગુણોથી રહિત હોય તો એટલે કે ત્રણે પ્રકારનું યોગદાન આપવામાં અસમર્થ હોય તો એણે આ ત્રણે વર્ણના લોકોને તેમનું કાર્ય કરવામાં સહાય કરવાની સેવા કરવી જોઈએ.

આજના યુગમાં આ વિશેષણોની કોઈ આવસ્યકતા નથી. તેમ છતાં પોતાના રાજનીતિક હિતની સિદ્ધિ માટે જાતિવાદને કયારેય સમાપ્ત ન થવાની દિશામાં સ્વતંત્રતા પછી કોઈ રચનાત્મક કામ નથી થયું. મોટા દુર્ભાગ્યની વાત તો એ છે કે મહર્ષિ દયાનન્દ અને આર્યસમાજે જન્મના જ્ઞાતિ પ્રથાના ઉન્મૂલન માટે જે આન્દોલન ચલાવ્યું છે તેને પણ રાજનીતિને કારણે મોટું નુકસાન પહોંચ્યું છે.

टंकारा समाचार
के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं।

-प्रबन्धक

ऋग्वेद में मित्रता का स्वरूप

❐ शिवनारायण उपाध्याय

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। उसका हर प्रकार का विकास समाज में रहकर तथा समाज की सहायता से ही होता है। प्रारम्भ में परिवार में उसका जन्म तथा पालन पोषण होता है परिवार भी समाज की सबसे छोटी इकाई है परिवार से बाहर निकलते ही उसका समाज से जुड़ाव होने लगता है। समवयस्क बालकों के साथ उसका खेलना-कूदना होता है। खेल-खेल में उनसे घनिष्टता बढ़ जाती है। एक दूसरे के बिना वह नहीं रह सकते। दुःख सुख में वे आपस में हाथ बँटाने लगते हैं। यही मित्रता का प्रारम्भिक स्वरूप है। विद्यालय में विद्याध्ययन करते समय उसका वास्ता कई नये छात्र छात्राओं पड़ता है, उनसे घनिष्टता बढ़ती है और अन्त में मित्रता में परिणीत हो जाती है। फिर जीवनयापन के लिए वह जिस क्षेत्र में कार्य करता है वहाँ के लोगों से भी सामान्य परिचय के बाद धीरे-धीरे कब वह मित्रता में बदल जाती है। उसे स्वयं ही उसका पता नहीं चलता। ऋग्वेद में कई ऋचाओं द्वारा श्रेष्ठ मित्रों के गुण बताये गये हैं, साथ ही यह भी बताया गया है कि यह मित्रता का तार कैसे टूट भी जाता है। अच्छे मित्र ही कैसे एक दूसरे के प्रति उदासीन हो जाते हैं और कभी-कभी एक दूसरे के विरोधी भी बन जाते हैं। हम इस विषय पर ऋग्वेद के आधार पर ही चर्चा कर रहे हैं।

आ च त्वामेता वृषणा वहातो हरी सखाया स्वङ्गा।
धानावरिन्द्रः सवनं जुषाणः सखा सख्युः श्रृणवद्वन्दनानि।

ऋ.3.43.4

वे लोग ही मित्र होने के योग्य है कि जो बड़े दुःख को प्राप्त होकर भी मित्रों का त्याग नहीं करते और जैसे दो या बहुत से घोड़े इकट्ठे होकर यर्थष्ट स्थानों में पहुँचाते हैं वैसे अपने आत्मा के समान प्रियजन इच्छा की सिद्धि को प्राप्त होते हैं।

उप नः सुतमा गहि सोममिन्द्र गवाशिरम्।
हरिभ्यां यस्ते अस्मयुः। ऋ 3.42.1.

वास्तव में वे ही व्यक्ति सब लोगों के मित्र हैं जो लोग अपने ऐश्वर्य से सब लोगों को बुला कर सत्कार करते हैं। मित्रों में एक दूसरे की वस्तुओं का आदान प्रदान चलता है।

ओजिष्ठन्ते मध्यतो भेद उद्भृतं प्र ते वयं ददामहे।
श्रोतन्ति ते वसो स्तोकाअधि त्वचि प्रति तान्देवशो विहि।

ऋ 3.21.5.

जो पुरुष बहुत ही उत्तम वस्तु जिस पुरुष को देवे उस पुरुष को चाहिए कि उस देने वाले पुरुष को वैसी ही वस्तु स्वयं भी देवे और जो लोग विद्वानों के सतसंग से श्रेष्ठ गुणों को प्राप्त होते हैं वे सम्पूर्ण जनों को कोमल स्वभाव युक्त कर सकते हैं। यहाँ इस बात पर ध्यान दिया जाना चाहिए कि उपहार के लेन-देन की प्रक्रिया दोनों और से चलती चाहिए। एक मित्र उपहार देता रहे और दूसरा बस उपहार लेता रहे तो फिर कुछ समय उपरान्त ही यह प्रक्रिया बन्द हो जायेगी तथा मित्रता में शिथिलता आ जावेगी।

उदुष्टुतः समिधा यन्ह अद्यौद्वर्ष्मन्दिवो अधि नाभा पृथिव्याः।
मित्रो अग्नि रीड्यो मातरिश्वा दूतो वक्षद्यजथाय देवान्।

ऋ 3.5.9.

पदार्थ-हे विद्वान्! जैसे स्तुति करने योग्य अग्नि समिधा से सेचन के विषय में प्रकाश और भूमि के बीच में उदय होता है वा जो अन्तरिक्ष में सोने वाला दूत के समान होता हुआ संगम करने वाले के लिए दिव्य गुणों को अधिकता से प्राप्त करे, वैसे ही प्रशंसा को प्राप्त हुआ महान् स्तुति करने योग्य हमारा मित्र हो।

भावार्थः- इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालंकार है। जैसे इस ब्रह्माण्ड में सूर्यरूप से अग्नि सबको तपाता है वैसे महान् मित्र अपने मित्रों को आनन्दित करता और दिव्य गुणों की प्राप्ति करता है।

यदि किसी व्यक्ति को एक श्रेष्ठ मित्र प्राप्त हो जाता है तो वे निश्चित रूप से निर्धनता को भगाकर श्रेष्ठ धनवान बन जाता है।

ओ नो गहि सख्येभिः शिवेभिर्म्महान्महीभिरूतिभि स्सरण्यन्।
अस्मे रयिं बहुलं सन्तरूत्रं सुवाचं भागं यशसं कृधि नः।

ऋ 3.1.19.

हे विद्वान्। आप मंगलमय मित्रों के लिए हुये कर्मो के साथ हम लोगों को प्राप्त हूजिये। बड़ी-बड़ी रक्षाओं से हम लोगों को प्राप्त होते हुए बड़े सज्जन आप दुःख से अच्छे प्रकार तारने वाले सुन्दर मृदु वाणी के निमित कीर्ति करने वाले सेवन करने योग्य बहुत प्रकार के पुष्कल धन को प्राप्त हम लोगों को यशस्वी कीजिये।

भावार्थः-यदि मनुष्य श्रेष्ठ मित्रों को प्राप्त हो तो उसकी बड़ी लक्ष्मी कैसे न प्राप्त हो। मित्रों में निष्कपटता का होना अत्यन्त आवश्यक है-

मित्रों अंहोश्चिदादुरुक्षयाय गातु वनते।
मित्रस्व हि प्रतूवैतः सुमतिरस्तिं विधतः। ऋ 5.65.4.

हे मनुष्यों जो मित्र दुष्ट आचरण से भी वियुक्त करके अनन्तर बहुत निवास के लिए पृथ्वी को सेवन करता है वह निश्चय से शीघ्र करने वाले परिचरण करते हुए मित्र की जो श्रेष्ठ बुद्धि है उसको ग्रहण करे।

भावार्थः- वे ही सच्चे मित्र हैं जो निष्कपटता से और शुद्ध भाव से परस्पर के जनों के साथ वर्तमान हैं।

कृतघ्नता सबसे बड़ा पाप माना जाता है, इसलिए हमें चाहिए कि हम कृतज्ञता का वरण करें कृतघ्नता को छोड़े।

वयं मित्रस्याव सिरयाम सप्रथस्तमे। अनेहसस्त्वोतयः
सत्रा वरूण शेषसः। ऋ 5.65.5.

हे मनुष्यों! बिना किसी हिंसा के आप से रक्षित और उत्तमजन शेष जिनके वे हम लोग सत्य से युक्त मित्र के अति विस्तार युक्त रक्षण आदि कर्म में प्रवृत्त होवें।

आ मित्रे वरूणे वयं गीर्भिर्जुहुमो अत्रिवत्।
नि बर्हिषि सदतं सोमपीतये। ऋ 5.72.1

भावार्थ- जो मित्र के समान बर्ताव करके सम्पूर्ण जगत् को सत्कार करते हैं उनके अनुसार सबको बर्तना चाहिए। सच्चा मित्र अपने मित्र के गुणों का फैलाव करता है तथा उसके दोषों को दूर करने का पूरा प्रयत्न करता है।

को तु मर्या अभिथितः सखा सखा यमत्रदीत्।
जहा को अस्मदीषते। ऋ 8.45.37.

भावार्थ-सच्चा मित्र मित्र पर कभी भी निष्कारण दोषारोपण नहीं करता है और न ही आपत्ति काल में उसका साथ छोड़ता है। मित्र को

(शेष पृष्ठ 19 पर)

समाचार दर्पण

आर्य कन्या गुरुकुल लुधियाना
गुरु पूर्णिमा पर्व आयोजित

31 जुलाई 2015 को आर्य कन्या गुरुकुल, शास्त्री नगर, लुधियाना में गुरु पूर्णिमा उत्सव मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री राजेन्द्रपाल जी स्याल (वरिष्ठ उपप्रधान आर्य समाज मॉडल टाऊन) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती आशा जी पहुजा (उप प्रधानाचार्य आर.एस.मॉडल स्कूल, लुधियाना) पधारी। गुरुकुल की प्रधानाचार्या श्रीमती सतीश तलवार ने सबको गुरु पूर्णिमा की बधाई दी तथा तीन बार गायत्री मन्त्र का उच्चारण करवाया। गुरुकुल के मैनेजर श्री मंगल राम जी मेहता ने पूर्व राष्ट्रपति महान वैज्ञानिक डॉ.ए.पी. जे अब्दुल कलाम जी के आकस्मिक निधन पर शोक व्यक्त करते हुए सभा में गायत्री मन्त्र का उच्चारण व एक मिनट के लिए मौन धारण करवाया। उन्होंने अध्यक्ष जी एवं मुख्य अतिथि जी का परिचय दिया तथा गुरु पूर्णिमा की बधाई देते हुए कहा कि यह पर्व गुरु व शिष्य के सम्बन्धों से जुड़ा हुआ है। गुरु अपने शिष्य के अज्ञानता के अन्धकार को दूर करता है तथा शिष्य भी अपने गुरु से कहता है-असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय। गणमान्य आर्य बन्धुओं ने अध्यक्ष जी एवं मुख्य अतिथि जी का पुष्पमालाओं से एवं ब्र. ने गुलदस्ते भेंट कर स्वागत किया।

श्री सुरेश जी मुंजाल, आचार्य रामानन्द जी एवं अन्य गणमान्य आर्य बन्धुओं की उपस्थिति में कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया। मंच संचालन दसवीं कक्षा की ब्र. बिन्दु ने किया। ब्र. ने समस्त अध्यापिकाओं का, प्रधानाचार्य श्री मोहन लाल जी कालड़ा ने मैनेजर श्री मंगल राम जी मेहता का, कोषाध्यक्ष श्री आर.बी.जी. खन्ना ने प्रधानाचार्य श्री कालड़ा जी का पुष्पमालाओं से स्वागत किया। ब्र. ने मन्त्र, भजन, भाषण गीत आदि कार्यक्रम प्रस्तुत करके तथा अपनी अनुशासन व्यवस्था से सभा को मन्त्र-मुग्ध कर दिया। आचार्य अनुपमा जी ने गुरु पूर्णिमा के महत्व पर विचार व्यक्त किए।

मुख्य अतिथि जी ने कहा कि शिष्य को कुसंगति, दुर्व्यसनों व आलस्य से दूर रहना चाहिए। ईश्वर में विश्वास रखते हुए हमें इन विघ्नों पर विजय प्राप्त करके जीवन में आगे बढ़ना चाहिए। गुरुकुल की ब्र. के द्वारा मुख्य अतिथि जी को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। शांति पाठ से पूर्व मैनेजर श्री मंगल राम जी मेहता ने महान क्रांतिकारी शहीद उधम सिंह को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके महान कार्यो पर प्रकाश डाला। गुरुकुल की प्रधानाचार्य जी ने सभी महानुभावों का धन्यवाद किया। शांति पाठ के साथ सभा सम्पन्न हुई।

योग एवं परिवार मिलन समारोह

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना में अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस एवं परिवार मिलन समारोह बड़े धूम-धाम से मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ श्री सुभाष अवरोल, श्री अनिल आर्य, श्री राजेन्द्र जी ने योगासन एवं प्राणायाम के द्वारा कराया और सभी को नित्ययोग करने के लिए प्रेरित किया। तदुपरान्त देवयज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञोपरान्त श्री कर्मवीर शास्त्री ने योग दिवस पर अपने वक्तव्य में कहा कि मनुष्यों को स्वयं एवं संसार को सुखी निरोग स्वस्था रहने के लिए यज्ञ और योग को नित्य पूर्ति श्रद्धा के साथ करना चाहिए। ऋषि लंगर का आयोजन श्री सुभाष परिवार ने अपने पुत्र सिद्धान्त अवरोल के जन्मदिन के उपलक्ष्य में आयोजित किया।

जन्म दिवस मनाया गया

महान स्वतन्त्रता, सेनी, देशभक्त व उच्च कोटि के नेता श्री लोक मान्य बाल गंगाधर तिलक जी एवं श्री चन्द्रशेखर आजाद का भी 23.06.2015 को जन्म दिवस पर यज्ञ द्वारा मनाया गया।

इस कार्यक्रम के संयोजन, तेजपाल सिंह आर्य ने उपरोक्त देश भक्तों के जीवन चरित्र व उनके द्वारा चलाये गये स्वतन्त्रता कार्यक्रम का विस्तार पूर्वक प्रकाश डाला। श्री तिलक जी ने नारा दिया था देश को पूर्ण स्वराज प्राप्त करना, हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। इसे कोई नहीं रोक सकता।

''समाजसेवा की अर्द्धशताब्दी'' स्मारिका का विमोचन नोबल पुरस्कार प्राप्त कैलाश सत्यार्थी जी ने किया

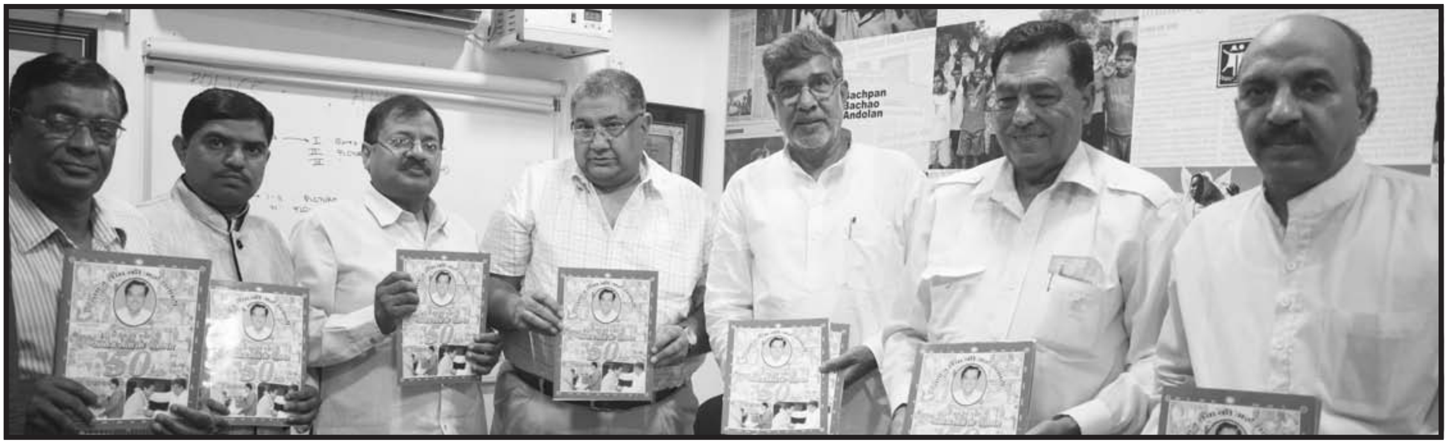

अर्जुनदेव चढ्डा को मैं व्यक्तिगत रूप से जानता हूं। ये बहुआयामी व्यक्तित्व के होने के साथ समाजसेवी के पर्याय बन गए हैं। ये एक ऐसे व्यक्तित्व हैं जिन्होंने समाजसेवा के लिए अपने जीवन के 50 वर्ष समर्पित कर दिए। इनके द्वारा किए गए कार्य न सिर्फ अनुकरणीय हैं वरन् नई पीढ़ी व सामाजिक सेवा में लगे लोगों के लिए प्रेरणास्पद हैं। उक्त विचार नोबेल पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यार्थी ने कोटा के प्रसिद्ध समाजसेवी अर्जुनदेव चढ्डा के सेवाकार्यों पर प्रकाशित ''समाजसेवा की अर्द्धशताब्दी'' स्मारिका के विमोचन के अवसर पर व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि हम उस देव दयानंद के शिष्य हैं जिन्होने अपने विश्वासघाती को भी क्षमादान दिया इसलिए कठिनाईयों को झेलते हुए भी समाज सेवा के कार्य करते रहना है।

स्मारिका के सहसम्पादक आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने बताया कि मल्टीकलर में प्रकाशित इस स्मारिका में अर्जुनदेव चढ्डा के विगत 50 वर्षो के दौरान समाजसेवा के विभिन्न क्षेत्रों में किये गये कार्यो का उल्लेख किया गया है।

इस अवसर पर कैलाश सत्यार्थी के कार्यालय में अर्जुनदेव चढ्डा के साथ कोटा के आर्य विद्वान रामप्रसाद याज्ञिक, वेदप्रचार समिति कोटा के अध्यक्ष अरविन्द पाण्डेय, आर्यसमाज विज्ञाननगर के मुकेश चढड्ा तथा विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं अजय सहगल ट्रस्टी महर्षि दयानंद स्मारक ट्रस्ट टंकारा उपस्थित थे।

योग शिविर का निमन्त्रण

आनन्दधाम, उधमपुर, जम्मू में पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी के सान्निध्य में निःशुल्क योग, ध्यान, साधना शिविर का आयोजन किया गया जिसमें अनुभवी आचार्यो एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि कराए जाएंगे तथा योगदर्शन, पठनपाठन की भी व्यवस्था है। शिविर में रोजड़, गुजरात से शिक्षित एवं कात्यायनमुनि विद्यापीठ के आचार्य श्री सन्दीप आर्य जी, वैदिक प्रवक्ता श्री अखिलेश भारतीय जी आदि अन्य अनेक विद्वान भी पधार रहे हैं। इस अवसर पर पूज्य महात्मा जी के ब्रह्मत्व में प्रतिवर्ष की भान्ति सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन भी किया गया है। शिविर में साधक अपनी शंकाओं का समाधान भी कर सकेंगे। आश्रम में पूज्य महात्मा जी के सान्निध्य में पहले लगाए गए शिविरों में शिविरार्थियों के बहुत अच्छे अनुभव रहे हैं इसलिए साधकों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है अतः इच्छुक साधक अपना स्थान आरक्षित करने के लिए फोन- 09419107788 व 09419198451 पर तुरन्त सम्पर्क करें।

गंगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कार

स्व. पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कार प्रतिवर्ष वैदिक सिद्धान्तों तथा महर्षि दयानन्द के विचारों की पुष्टि में वैदिक विद्वानों को प्रोत्साहनार्थ उनकी कृति पर अब 21000/- रूपये का पुरस्कार दिया जाता है। यह पुरस्कार प्रयाग में एक भव्य समारोह में प्रदान किया जाता है। इस वर्ष प्रख्यात विद्वान डॉ. राम प्रकाश कुलाधिपति गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय को प्रदान किया जाएगा।

कात्यायनमुनि विद्यापीठ का शुभारम्भ

महात्मा रसीलाराम वैदिक वानप्रस्थाश्रम, गढ़ी, उधमपुर द्वारा एक नया कीर्तिमान स्थापित करते हुए 26 जुलाई 2015 को विधिवत् 'कात्यायनमुनि विद्यापीठ' की स्थापना की गई जिसमें ब्र. संदीप आर्य, ब्र. लोकेन्द्र आर्य तथा ब्र. जयेन्द्र आर्य इन तीन ब्रह्मचारियों का उपनयन संस्कार विद्यापीठ के कुलपति एवं आश्रम के संरक्षक व मुख्य निर्देशक पूज्य महात्मा चैतन्यमुनिजी ने कराया। उपस्थित जनसमूह ने जम्मू कश्मीर प्रान्त में इस प्रकार का प्रथम आर्ष गुरुकुल खोले जाने पर अत्यधिक प्रसन्नता व्यक्त की। ट्रस्ट के सभी सदस्यों ने पूज्य महात्मा चैतन्यमुनिजी का विशेष धन्यवाद किया जिनके सान्निध्य में आश्रम निरन्तर प्रगति कर रहा है। विद्यापीठ में होने वाले भोजन, आवास एवं पुस्तकों आदि का व्यय आश्रम वहन करेगा तथा आचार्य जी को आश्रम एवं विद्यापीठ चलाने के सर्वाधीर प्राप्त रहेंगे। अध्ययन के इच्छुक एवं दानदाता शीघ्र सम्पर्क करें। आचार्य संदीप आर्य, आचार्य 094668211003, महात्मा चैतन्यमुनि-कुलपति 09418053092

आर्य समाज द्वारा खाद्य सामग्री वितरित

आर्य समाज कोटा द्वारा मधुस्मृति संस्थान कोटा को खाद्य सामग्री प्रदान की गई। मुख्य अतिथि डी.एस.सी.एल. के सीनियर वाइस प्रेसीडेन्ट के.एम. टेण्डन ने कहा कि जरूरतमन्द बच्चों के बीच में आकर मन को बहुत शान्ति मिलती है। आर्य समाज जिला सभा प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि मानवता की सेवा सबसे बड़ा धर्म है। सेवा के माध्यम से समाज का उत्थान ही आर्य समाज का लक्ष्य है।

68वां नि:शुल्क चिकित्सा शिविर

आर्य समाज, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर के तत्वावधान में जनसहयोग से 68वां नि:शुल्क चिकित्सा एवं जांच शिविर स्वतन्त्रता सेनानी श्री छोटू सिंह आर्य धर्मार्थ हॉस्पिटल अलवर में यज्ञ से प्रारंभ हुआ। श्री निरंजन लाल डाटा ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला आपने रिबिन काटकर शिविर का उद्घाटन किया। शिविर में रियायती दरों पर जाँच की गई। शिविर में लगभग 300 रोगियों को नि:शुल्क सेवाऐं प्रदान की गई।

विद्यार्थी सम्मान दिवस

फरीदाबाद में महर्षि दयानन्द शिक्षण संस्थान के संस्थापक, अध्यक्ष महात्मा कन्हैया लाल मेहता जी का जन्मदिवस की एक ऐसी ही तिथि है, जिस पर लाखों लोग, अमिट हस्ताक्षर सौंपते है। वे उल्लसित होते हैं, प्रोत्साहन पाते हैं और मंव ऊर्जा से संकल्पबद्ध होते हैं। यह दिवस के.एल. मेहता दयानन्द पब्लिक विद्यालयों और महिला महाविद्यालय के विद्यार्थियों के बीच विद्यार्थी अवार्ड दिवस के रूप में मनाया जाता है। जिसमें सी.बी.एस.ई. तथा हरियाणा बोर्ड की दसवीं तथा बारहवीं कक्षाओं में अपने-अपने विद्यालय में सर्वोच्च अंक प्राप्त विद्यार्थियों को मेरिट सर्टिफिकेट तथा अगले दो वर्षो की शिक्षा नि:शुल्क प्रदान की जाती है तथा सभी विद्यालयों में अपने बोर्ड में सबसे अधिक अंक पाने वाले विद्यार्थी को मेहता परिवार से स्वर्ण, पदक द्वारा सम्मानित किया जाता है।

कै. देवरत्न आर्य स्मृति दिवस आयोजित

आर्य समाज अजमेर में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान स्व. केप्टन देव रत्न आर्य की चतुर्थ पुण्य तिथि के अवसर पर उनके परिवार जनों ने आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के बताये हुए मार्ग पर चलते हुए छुआछूत मिटाने का संकल्प लिया। निवास पर वार्ड के वाल्मिकी समाज के सफाई कर्मचारियों को सपरिवार आमंत्रित कर उनके साथ यज्ञ किया यज्ञ के ब्रह्मा आर्य समाज अजमेर के पुरोहित पं. अमरसिंह शास्त्री थे तत्पश्चात् केप्टन आर्य की धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता आर्य व परिवार के सभी सदस्यों ने उनके साथ स्नेह भोज कर उन्हें भेंटस्वरूप वस्त्र व नकद राशि प्रदान की। परिवार के सदस्यों डॉ. वीर रत्न आर्य, साध्वी उत्तमा यति, श्रीमती सुषमा आर्य, श्रीमती उमा आर्य, सोम रत्न आर्य, श्रीमती वन्दना आर्य, धर्मेन्द्र आर्य, श्रीमती श्रुति आर्य, नीरज आर्य एवं गार्गी आर्य ने सम्पूर्ण कार्यक्रम में सहभागिता निभाकर केप्टन आर्य को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

योग से भारत विश्व गुरु बना

योग मानव जीवन के लिए अनिवार्य है। महर्षि पतंजलि ने अष्टांग योग के द्वारा संसार को एक निश्चित जीवन प्रणाली प्रदान की है। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि को हम जीवन में अपना कर श्रेष्ठ मानव बन सकते हैं। यह उदगार मुख्य अतिथि कोटा दक्षिण के विधायक श्री संदीप शर्मा ने आर्य समाज विज्ञान नगर के परिसर में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर योग साधकों के बीच व्यक्त किए।

सोमेन्द्र शास्त्री ने परचम लहराया

गुरु द्रोणाचार्य की तपस्या स्थली एक लव्य की साधनास्थली कौरव पाण्डवों की परीक्षा स्थली पूठ (पुष्पावती) में स्थापित महर्षि दयानन्द सरस्वती महाविद्यालय पूठ (पुष्पांवती) के स्नातक सोमेन्द्र शास्त्री ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित जूनियर रिसर्च फेलोशिप (J.R.F) परीक्षा उत्तीर्ण कर गुरुकुल पूठ का नाम उज्जवल किया है। यू.जी.सी. की परीक्षा में लगातार सफलता का क्रम रखते हुए सोमेन्द्र शास्त्री ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का परचम लहराया है।

सोमेन्द्र शास्त्री अपनी सफलता (आचार्य धर्मपाल जी पूर्व) स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती महाराज संचालक गुरुकुल पूठ के श्रीचरणों में अर्पित करते हुए कहा कि आज जो कुछ भी हूँ वह गुरु जी के आशीर्वाद का प्रभाव है। स्वामी जी आशीर्वाद प्रदान कर उज्जवल भविष्य की कामना की। सोमेन्द्र शास्त्री की सफलता से गुरुकुल में उत्साह का माहौल बना रहा।

चुनाव समाचार

आर्य समाज रामनगर, रूड़की, हरिद्वार, उत्तराखण्ड

प्रधान- श्रीमती उषा रानी आर्या **मन्त्री**- श्री रामेश्वर प्रसाद सैनी

कोषाध्यक्ष- श्री जे.डी. त्यागी

आर्य समाज वेद मन्दिर, राजाजीपुरम, लखनऊ, उ.प्र.

प्रधान- डॉ. आनन्द बरनवाल **मन्त्री**- श्री निरंजन सिंह

कोषाध्यक्ष- श्री राजीव बत्रा

आर्य समाज नकुड़, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश

प्रधान- श्री अभय सिंह सैनी **मन्त्री**- श्री भूपेन्द्र कुमार आर्य

कोषाध्यक्ष- श्री हरिदत्त आर्य

आर्य समाज विज्ञाननगर

प्रधान- श्री जे.एस. दुबे **मन्त्री**- श्री राकेश चड्ढा

कोषाध्यक्ष- श्री किशोरी लाल दिवाकर

पाखण्डियों के लक्षण

धर्म कुछ भी न करे, परन्तु धर्म के नाम से लोगों को ठगे। सर्वदा लोभ से युक्त कपटी संसारी मनुष्यों के सामने अपनी बड़ाई के गपोड़े मारा करे। प्राणियों का घातक, अन्यों से बैर-बुद्धि रखने वाला, बुरों से और दिखावे को अच्छों से भी मेल रखने वाला, कपट, अधर्म, विश्वासघात से अपना प्रयोजन साधने में चतुर, हठी, झूठ-मूठ ऊपर से शील, संतोष साधुता दिखाने वाला, ऐसे लक्षणों वाले पाखण्डी होते हैं, उनका विश्वास या सेवा कभी न करें।

पाखण्डियों को दान का फल

तीन प्रकार के लोग, एक जो ब्रह्मचर्य, सत्यभाषण आदि तथा तप से रहित, दूसरे जो वेद विद्या-विहीन, तीसरे धर्म के नाम पर दूसरों से दान लेने वाले, यह तीनों पत्थर की नौका से समुद्र में तरने के समान अपने दुष्ट कर्मो के साथ ही दु:ख सागर में डूबते ही हैं, अपने दान-दाताओं को साथ डूबा देते हैं। जो धर्म से भी प्राप्त हुए धन को उक्त तीनों को दान देता है, उस दानदाता का नाश इसी जन्म में और लेने वाले का नाश परजन्म में हो जाता है।

- सत्यार्थ प्रकाश (चतुर्थ समुल्लास)

मौरिशस यात्रा का सुनहरा अवसर

दिनांक 1.10.2015 से 7.10.2015 (6th Night 7th Day)

साथ में योग शिविर मौरिशस में धर्मप्रेमी भाईयों, बहनों के लिए ARYA TRAVEL के सौजन्य से मौरिशस के विश्वप्रसिद्ध समुद्र किनारे सफेद रेत व यहां के मनोहारी दृश्य की यात्रा का सुनहरा अवसर एवं यज्ञ योग साधना शिविर 1-10-2015 से 7-10-2015 तक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के वैदिक विद्वान आचार्य श्री चन्द्रशेखर शास्त्री जी के पावन सानिध्य में होने जा रहा है।

यात्री किराया- प्रति व्यक्ति 66000/- बच्चा बारह वर्ष से कम- 57500/-इस यात्रा में 3 STAR Hotel, Break Fast - Dinner Includes:- इस यात्रा में जाने के इच्छुक व्यक्ति अपना नाम तथा अग्रिम राशि के रूपमें 45000/- रुपया अवश्य जमा करायें। इसमें आने जाने का टिकट जो ग्रुप फेयर मिल रहा है व आने जाने का 26000/- रुपया एयरपोर्ट टैक्स व वीजा भी इसमें शामिल है। बस द्वारा भ्रमण व होटल में रहने की व्यवस्था प्रातः नाश्ते की व रात्रि भोजन व्यय सम्मिलित है।

मुख्य आकर्षण :- शिविर के अन्तर्गत मौरिशस के ऐतिहासिक एवम् पर्यटन के हिसाब से रूचिकर स्थानों का भ्रमण भी कराया जाएगां

विशेषः- इस यात्रा में यात्रियों के पासपोर्ट की अवधि 2016 तक Vialed होनी चाहिए। यात्री अपना चैक या Draft ARYA TRAVEL अथवा Vijay Sachdev के नाम से भेज सकते हैं।

सम्पर्क सूत्रः- आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड विकासपुरी, नई दिल्ली-110018

मोबाइल- 09810084806

निवेदकः- विजय सचदेवा 2613/9, चूनामण्डी, पहाड़गज, नई दिल्ली-110055

011-45112521, 9811171166

पत्र दर्पण

अनन्य, अतुल, अजय

मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं कि आपने 60 वसन्तों को मनोनय अवधि में समाज के प्रत्येक घटक को वेदों की अमृत वाणी का निष्ठा से निष्पादन किया है। वह स्तुत्य है, इस प्रशंसनीय कार्य से आप समाज के अतुल अजय है। प्रभु से प्रार्थना है कि हमारे अनन्य अजय, अनल, अनिल की भांति अनुकरणीय सेवा से आर्य समाज की आत्मीयता से आजीवन, आज्ञाकारी पुत्र की भांति आद्यन्त, आद्य, आराधना से, शुभ कार्यो से सभी को आल्हादित करते रहें। वही आपकी आस्था है। पुनः मंगलकामना से

आपका अपना भाई

त.शि.क.कण्णन, चेन्नई

अगस्त के पत्र में मैंने भाई अजय जी का संक्षिप्त जीवन वृतान्त पढ़ा। जिस लगन से अजय जी टंकारा की सेवा कर रहे है वह अद्‌भुत है और क्यों न हो उनको तो आर्य समाज घुट्टी में मिला है। ईश्वर उनको शतायु करे, वह सदा स्वस्थ रहे और मुस्कराते रहें और इसी कर्मठता से आर्य समाज का कार्य करते रहे। षष्ठी पूर्ति के अवसर पर उनको मेरी ओर से बधाई। आदर एवं शुभकामनाओं सहित

देवराज गुप्ता

तेजस्वी कर्म योद्धा

विषमताओं और सम्भावनाओं, में जूझता एक आभाभ्य व्यक्तित्व
आर्यत्व के पथ का बन गया सिरमौर।
सम्पादीय कर्मक्षेत्र में, तेजस्वी कर्म योद्धा
अजय सहगल-एक वट वृक्ष।
60 वर्ष में युग पर्वतक कर्मयोगी
युग दृष्टा, समाज सुधारक, जनमानस के मसीहा।
कर्मठता, उत्साह, संकल्प शक्ति
क्रियात्मक सकारात्मक शक्ति, टंकारा समाचार के लौह स्तम्भ
प्रखर लेखनशक्ति, गहन अध्ययन
दिया और दशा का पूर्ण ज्ञान
आर्यत्व का तपोवन, कर्मशक्ति, ज्ञान शक्ति, मर्यादा
अतुलनीय विचारधारा, अभी मंजिल बहुत दूर
आर्य समाज की सेवा में, एक अग्रदूत बनकर आगे बढ़े।
मेरी शुभकामनाएं और साधुवाद

- ऋषि राम कुमार, गुड़गांव

आर्य जगत् के लिए जीवन दानियों/विद्वानों एवं भजनोपदेशकों को पुरस्कारित करने हेतु आवेदन पत्र आमन्त्रित

राव हरिश्चन्द्र आर्य चेरिटेबल ट्रस्ट नागपुर के द्वारा आर्य जगत् के सर्वोच्च पुरस्कारों के लिए जीवन दानियों/विद्वानों/भजनोपदेशकों से आवेदन पत्र आमंत्रित।

❑ आर्य रत्न पुरस्कार सृ. सं. 1960853113.14.15.16 के लिए पुरस्कार संख्या 4 प्रत्येक पुरस्कार एक लाख रूपया 100000/- चार विद्वान जीवन दानियो से आवेदन पत्र आमंत्रित है, जिनका पूरा जीवन परोपकार, त्याग, तपस्या, समाज सेवा, योग, शिक्षा, गौसंवर्धन एवं आर्ष प्राच्याविद्या, के प्रसार व प्रचार में नैष्ठिक जीवन के साथ निस्वार्थ भाव से उल्लेखनीय योगदान रहा है।

❑ आर्य विभूषण पुरस्कार सृ सं 1960853114.15.16 के लिए पुरस्कार संख्या 3 प्रत्येक पुरस्कार 51000/- रूपया इक्यावन हजार रूपयों का, यह पुरस्कार उन भजनोपदेशकों प्रचारकों को दिया जायेगा, जिनका पूरा जीवन वेद-प्रचार, प्रसार, लेखन, वैदिक साहित्य लेखन व समाज सेवा में लगा हो।

❑ आर्य गौरव पुरस्कार सृ. सं. 1960853114.15.16 के लिए पुरस्कार संख्या 3 प्रत्येक पुरस्कार 21000/- रूपयों का, यह पुरस्कार उन भजनोपदेशकों प्रचारकों को दिया जायेगा जिनका पूरा जीवन वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में लगा रहा है।

❑ आवेदन पत्र स्वयं या विद्वान के निकटतम जीवन से परिचित व्यक्ति द्वारा भी दिया जा सकता है प्रत्येक आवेदन पत्र के साथ विद्वान् के निकटतम जीवन से परिचित व्यक्ति का अनुभोदन भी साथ आना आवश्यक है।

सभी प्रस्ताव अनुभेदन के साथ ट्रस्ट के नीचे लिखे पते पर चयन समीति के पास 30 सितम्बर तक पहुँच जाने चाहिए। बाद में आये प्रस्तावों पर विचार नहीं होगा। पुरस्कारों के लिए आये आवेदन पत्रों पर चयन-समिति का निर्णय ही अन्तिम मान्य होगा।

पता- पुरस्कार चयन-समिति, राव हरिश्चन्द्र आर्य चेरिटेबल ट्रस्ट, 387 आर्योदय रूईकर मार्ग महल, नागपुर-440032 (महाराष्ट्र)

- राव हरिश्चन्द्र आर्य, मैनेजिंग ट्रस्टी

(पृष्ठ 1 का शेष)

कैसे कर सकता है...... मन्त्र का भाव स्पष्ट है कि हम अपनी सब प्रकार की शक्तियों का संवर्धन करें और फिर उनसे संसार का उपकार करते हुए परमात्मा की उपासना में लगे रहें। यही जीवन का सार है तथा ऐसा व्यक्ति ही अपने आप को संसार में महिमामयी बनाता है। उसके जीते-जी तो उसकी महिमा होती ही है मगर संसार से जाने के बाद भी ऐसे व्यक्ति की महिमा सदा बनी रहती है.......

अथर्ववेद में भी आत्मा को उद्बोधित करते हुए उसकी शक्ति के सम्बन्ध में कुछ इसी प्रकार के उत्कृष्ट विचार कहे गए है-**शुकोऽसि भ्राजोऽसि स्व रसि ज्योतिरसि। आप्तुहि श्रेयांसमति समं काम॥** (अ. 2.11.5) मन्त्र में कहा गया है (शुक्र असि) तू पवित्र व शक्तिशाली बना है अर्थात् अपने शरीर को स्वस्थ और पवित्र बना। (भ्राज: असि) तुझे परमात्मा ने चमकदार अर्थात् उत्तम एवं शक्तिशाली इन्द्रियाँ और मन दिया है अत: तू इन्हें पवित्र बनाकर जीवन को सार्थक बना। हमें अपनी कर्मोन्द्रियों तथा ज्ञानेन्द्रियों से पवित्र ही कर्म करने चाहिए और यह तभी संभव हो सकेगा जब हम अपने मन को संयमित करेंगे। अत: अपने मन को संकल्पशील बनाकर साधना-उपासना की ओर लगाना चाहिए। (स्व: असि) तुझे प्रभु ने ज्ञान की वाणियों का उच्चारण करने वाला बनाया है। हमें अपनी वाणी का सदुपयोग करना आना चाहिए क्योंकि इसी से हमें सुख व आनन्द की प्राप्ति होगी। वाणी का सदुपयोग हम तभी कर सकेंगे यदि हमारा मस्तिष्क ज्ञान से परिपूर्ण होगा अत: हमें वेदादि आर्ष ग्रन्थों का निरन्तर स्वाध्याय करके अपनी वाणी को ओजस्वी, पवित्र, शाली और सत्य से परिपूर्ण बनाना चाहिए। (ज्योति: असि) तू ज्ञान से जगमगा है.. .. उसे निरन्तर प्रज्ज्वलित रखना है। जब व्यक्ति अपना व्यक्तित्व इस प्रकार का बना लेगा तो फिर वह (आप्नुहि श्रेयांसम्) अपने से श्रेष्ठ व्यक्तियों को प्राप्ति करेगा अर्थात् उसका सात्विक भावों के कारण उसकी मैत्री उच्च विचार वालों के साथ स्थापित हो जाएगी और वह अपने बराबर वालों से (समम् अतिक्राम) बहुत आगे निकल जाएगा..... वह अपने उपरोक्त गुणों के आधार पर स्वयं ही संसार में अपनी महिमा स्थापित कर लेगा......।

-महर्षि दयानन्द धाम, महादेव, सुन्दरनगर-174401, हि.प्र.

ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलों में टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्त्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहाँ पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देता है। कुछ ऋषि भक्त यहां कई वर्षो से पधार रहे है यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते हैं कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मीयता बनी रहे। पिछले वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया है कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाए। प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष 1000/- रूपये देकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं। इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाए और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाए। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अप्रिथधक-से-अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि जन्मस्थान से जुड़ सकते हैं। 10000 सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य है।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक

सत्यानन्द मुंजाल	शिवराजवती आर्या	रामनाथ सहगल
(मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान)	उप-प्रधाना	(मन्त्री)

(पृष्ठ 2 का शेष)

महात्मा हंसराज उत्सव की अध्यक्षता करने साहिबाबाद आए थे। इससे पूर्व डी.ए.वी. के प्रथम विश्वविद्यालय की स्थापना पर अपनी प्रसन्नता और आशाओं को प्रकट कर उन्होंने हमें अनुग्रहीत किया था। हमारा कोई भी राष्ट्रीय स्तर का समारोह उनके बिना नहीं हुआ। स्वामीजी अपने स्वप्नों के सार्थक करने हेतु डी.ए.वी. को एक सशक्त माध्यम के रूप में देखते थे। वैदिकयति मंडल का प्रधान होना, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का निर्विरोध प्रधान स्वीकार किया जाना स्वामीजी की निर्विवाद छवि तथा सर्वप्रियता के प्रमाण हैं। स्वामी सुमेधानन्द जी परस्पर सामनस्य, अविद्वेष तथा एकता की आवश्यकता को बड़े मार्मिक शब्दों में व्यक्त करते रहे। भावी-पीढ़ी में राष्ट्रीयता और सच्चरित्रता उनका सबसे बड़ा सरोकार रही।

मित्रो, मुझे ऋषि दयानन्द के पूना में दिये गये अंतिम प्रवचन का स्मरण हो रहा है। अपने जीवन का परिचय दे चुकने के बाद उन्होंने कहा-''आर्य धर्म की उन्नति के लिए मुझ जैसे बहुत से उपदेशक होने चाहिए। ऐसा काम अकेला आदमी भली प्रकार नहीं कर सकता।'' आगे कहा-''सर्वत्र आर्य समाज कायम होकर मूर्तिपूजा आदि दुराचार दूर हो जाएं। वेद-शास्त्रों का सच्चा अर्थ सबके समझ में आवे और उन्हीं के अनुसार लोगों का आचरण होकर देश की उन्नति हो जावे। पूरी आशा है कि आप सज्जनों की सहायता से मेरी यह इच्छा पूर्ण होगी।'' ऋषि के यह वचन आपकी सेवा में रखने का मेरा विशेष अभिप्राय है। ऋषि दयानन्द की इच्छा कि देश में बहुत से उपदेशक हो' पूरी कैसे हो आज यह यक्ष-प्रश्न है।

बड़ी ही विनम्रता से आर्य समाज की वर्तमान दशा पर मैंने भी समय-समय पर अपनी चिंता जताई है। आइए, आज स्वामी सुमेधानन्दजी को एक सच्ची श्रद्धांजलि यह संकल्प करके दें कि जिन आध्यात्मिक पीड़ाओं को वे अपने साथ ले गये हैं। उनसे आर्य समाज को मुक्ति दिलाएंगे। स्वामीजी वास्तव में हमारे बीच से गये भी नहीं है। उनके वैयक्तिक गुण-विद्या, प्रेम, गायत्री उपासन, दीनों की सहायता, सच्चे ईश्वर और सच्ची उपासना के प्रति श्रद्धा, एक-एक गुण अपने आप में एक-एक सुगंधित पुष्प है। आज हम यहां एकत्र हैं तो यह संकल्प लें कि हम इन गुणों में से कम-से-कम एक-एक गुण अपने जीवन में धारण करेंगे और फिर जब भी हम एकत्र हों तो ये सारे गुण एकत्र होकर अपने सुवास से वातावरण को सुगंधित करें जिनमें स्वामी सुमेधानन्दजी का प्रसन्न चेहरा हम सब को नजर आए। ईश्वर हमें सामर्थ्य दे कि हम इन संकल्पों को पूर्ण कर सकें। ''ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो''।

- डॉ. पूनम सूरी, प्रधान

(पृष्ठ 13 का शेष)

आपत्तिकाल में सहायता न करना ही मित्रता का टूट जाना है।

न स सखायेने ददाति सख्ये सचाभुवे सचमानाय पित्वः।
अपास्मात्प्रेयान्न अस्ति प्रणन्तमस्यमरणं चिदिच्छेत।

ऋ 10.117.4

भावार्थ- वह सखा नहीं है जो साथी, समय पर काम में आने वाले सखा के लिए अन्न आदि आवश्यकता की वस्तुओं को नहीं देता है। यदि उस अदाता के पास वह अर्थी कठिनाई में पड़ा मित्र वापस चला जाता है तो तो वह घर घर नहीं है। वह निराश हुआ मित्र दूसरे दाता धन के स्वामी के पास भी जा सकता है।

इन्द्रं वो नरः सख्याय से पुर्महोयन्तः सुमतये चकानाः।
महाहि दाता वज्रहस्तो अस्तिमहानु रण्वमवसे यजध्वम्।

ऋ 6.29.1.

भावार्थः- हे मनुष्यों! जो आप लोगों के साथ मित्र पन के लिए दृढ़ शपथ करके मन और धनों से उपहार के लिए प्रयत्न करते हैं उनका आप लोग सर्वदा सत्कार करिये तथा इनके साथ मित्रपन में वर्ताव करिये। इस प्रकार हमने देख लिया है कि ऋग्वेद में मित्रता के विषय आवश्यक जानकारी हमें दे दी है। इति।

- 73, शास्त्री नगर, दादाबाड़ी, कोटा (राज.)-324 009

(पृष्ठ 2 का शेष)

श्री पी. मित्रा ने राज्ट्रपति द्वारा जारी आचार्य देवव्रत की नियुक्ति का अधिपत्र पढ़ा। आचार्यजी ने संस्कृत में शपथ लेकर प्रदेश में एक इतिहास रच दिया। संस्कृत भाषा में शपथ लेना इस आयोजन पर उपस्थित प्रदेश के मुख्यमंत्री राजा वीरभद्र सिंह, विधान-सभा में विपक्ष के नेता श्री पी.के. धूमल, विधान-सभा अध्यक्ष श्री बृजबिहारी लाल 'बुटेल' सहित शपथ-समारोह में उपस्थित प्रदेश के नेताओं के लिए राज्य के इतिहास में अपूर्व घटना थी। पद संभालते ही महामहिम राज्यपाल ने हिमाचल प्रदेश को प्रत्येक क्षेत्र में एक आदर्श राज्य बनाने का संकल्प दोहराया। आचार्य देवव्रत का जीवन शिक्षा, चिकित्सा और स्वास्थ्य के मिशन से लम्बे समय तक जुड़ा रहा है। उनकी शिक्षा दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार से आरंभ होकर गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर (हरिद्वार), पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, में हुई, जिसके बाद उन्होंने 'ऑल इण्डिया काउंसिल फॉर नेचुरोपैथी' से 'डॉक्टर ऑफ नेचुरोपैथी एण्ड योगिक साइंस' की डिग्री प्राप्त की। पैंतीस वर्षों की कठिन तपस्या से आचार्य देवव्रत जी ने गुरुकुल, कुरुक्षेत्र को वैदिक और आधुनिक शिक्षा का एक राष्ट्रीय केन्द्र बना दिया। इस गुरुकुल के बच्चों ने शिक्षा, खेल और अन्य सभी क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का सिक्का जमाया है। गुरुकुल, कुरुक्षेत्र जैविक खेती, प्राकृतिक चिकित्सा तथा देसी गऊ के अनुसंधान, योग तथा अन्य संबंधित क्षेत्रों का राष्ट्रीय संस्थान बन गया है। आचार्यजी इन सभी कार्यों को करते हुए वैदिक मूल्यों के प्रचार-प्रसार के लिए लेखन-कार्य और युवाओं में सामाजिक और नैतिक मूल्यों की चेतना उत्पन्न करने के लिए शिविरों का राष्ट्रीय स्तर पर आयोजन करते रहें हैं। हाल ही में आचार्य देवव्रतजी के मार्गदर्शन में अम्बाला में 'चमन वाटिका अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल' की स्थापना हुई। आयुर्वेद का पठन-पाठन, वृक्षारोपण तथा यज्ञ-चिकित्सा द्वारा प्रदूषण मुक्त समाज की रचना करना आचार्यजी का प्रिय सरोकार रहा है।

आचार्यजी को उनकी उपलब्धियों और सेवाओं के लिए समय-समय पर विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया जाता रहा है।

जनवरी, 1959 को हरियाणा के ग्रामीण क्षेत्र में जन्में आचार्य देवव्रत अपने बाल्यकाल से ही ऋषि दयानन्द और वेद के सच्चे अनुयायी रहे हैं। डी.ए.वी. संस्थाओं और आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रति आचार्यजी का विशेष स्नेह रहा है और वे इन संस्थाओं के माध्यम से देश में युवाओं के चरिण-निर्माण को लेकर चल रहे वैदिक कार्यक्रम के सक्रिय मार्गदर्शक व सहयोगी रहे हैं। डी.ए.वी. के शिक्षकों, प्राचार्यों की प्रशिक्षण कार्यशालाओं में आप अत्यंत प्रभावकारी उद्बोधन देते रहे हैं।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति के प्रधान श्री पूनम सूरीजी ने आचार्यजी को इस उपलब्धि के लिए हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ दीं और आशा व्यक्त की कि उनके मार्गदर्शन और संरक्षण में हिमाचल प्रदेश में आर्य समाज और डी.ए.वी. कार्यक्रमों को नये आयाम मिलेंगे।

अच्छे इंसान सिर्फ अपने कर्म से पहचाने जाते हैं क्योंकि अच्छी बातें तो बुरे लोग भी कर लेते हैं.....

टंकारा समाचार सितम्बर 2015

Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2015-16-17

अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2015-16-17

Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-09-2015

R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथिः 23.08.2015

मुद्रक व प्रकाशक–रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली–5 मोबाइलः 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय